गौमाता राष्ट्रमाता
स्वतःस्फूर्त गौ-प्रतिष्ठा आन्दोलन
Visit : www.1008.guru / Ph. : 7417417414

हिन्दी दैनिक

राष्ट्रीय स्वाभिमान

RNI No. : MAHHIN/2008/24084. www.rashtriyaswabhimaan.com

● वर्ष : 18 ● अंक : 130 ● मुंबई, सोमवार, 23 नवम्बर 2026 ● पृष्ठ : 4 ● मूल्य 1 रुपए

बिसलेरी के पैकेज्ड पानी पर सुरक्षा का सवाल, दो जांचों में नमूना असुरक्षित; एफएसएसएआई ने मुकदमे को दी मंजूरी



नई दिल्ली। देश में बोतलबंद पानी के सबसे चर्चित ब्रांडों में शामिल बिसलेरी के पैकेज्ड ड्रिंकिंग वाटर को लेकर खाद्य सुरक्षा से जुड़ा गंभीर मामला सामने आया है। भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) ने बिसलेरी इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड के खिलाफ अभियोजन चलाने की मंजूरी दे दी है। कंपनी के परिसर से लिए गए पैकेज्ड ड्रिंकिंग वाटर के एक नमूने की पहली प्रयोगशाला जांच में ब्रोमेट की मात्रा निर्धारित सीमा से अधिक पाई गई थी, जिसके आधार पर उसे असुरक्षित घोषित किया गया। कंपनी की ओर से रिपोर्ट के खिलाफ अपील किए जाने पर नमूने की दोबारा जांच रेफरल फूड लैबोरेटरी में कराई गई। लेकिन दूसरी जांच में भी पानी निर्धारित सुरक्षा मानकों पर खरा नहीं उतरा। इस बार नमूने में पॉलीन्यूक्लियर एरोमैटिक हाइड्रोकार्बन (पीएएच) की मौजूदगी सामने आई। लगातार दो जांचों में नमूना असुरक्षित पाए जाने के बाद नियामक ने खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम, 2006 के तहत कंपनी के खिलाफ कानूनी कार्रवाई आगे बढ़ाने की अनुमति दी है। हालांकि, अभियोजन की मंजूरी को कंपनी का दोष अदालत में साबित हो जाना नहीं माना जा सकता। मामले में अंतिम निर्णय न्यायिक प्रक्रिया के बाद ही होगा।

एफएसएसएआई के अनुसार, यह मामला बिसलेरी इंटरनेशनल के परिसर से लिए गए पैकेज्ड ड्रिंकिंग वाटर के नियामक नमूने से जुड़ा है। यहां एक महत्वपूर्ण बात यह है कि जांच के लिए लिया गया उत्पाद सामान्य पैकेज्ड ड्रिंकिंग वाटर था, न कि मिनरल वाटर। खाद्य सुरक्षा नियमों के तहत पैकेज्ड ड्रिंकिंग वाटर की गुणवत्ता और उसमें मौजूद रासायनिक तत्वों की मात्रा के लिए निर्धारित मानकों का पालन करना अनिवार्य है। बोतलबंद पानी सीधे लोगों के दैनिक उपभोग से जुड़ा उत्पाद है, इसलिए इसकी गुणवत्ता और सुरक्षा को लेकर नियामक संस्थाएं नियमित रूप से नमूनों की जांच करती हैं। इस मामले में प्रयोगशाला की रिपोर्ट में निर्धारित मानकों से जुड़ी खामियां सामने आने के बाद नियामक कार्रवाई की प्रक्रिया शुरू हुई।

पहली प्रयोगशाला जांच में पानी के नमूने में ब्रोमेट की मात्रा तय सीमा से अधिक पाई गई। खाद्य सुरक्षा मानकों के अनुसार, पेयजल में इस रासायनिक तत्व की मात्रा निर्धारित सीमा के भीतर रहनी चाहिए। इससे अधिक मात्रा मिलने पर उत्पाद को निर्धारित गुणवत्ता और सुरक्षा मानकों के अनुरूप नहीं माना जाता। इसी आधार पर पहली जांच में नमूने को असुरक्षित घोषित किया गया। यह रिपोर्ट कंपनी के लिए नियामकीय स्तर पर गंभीर मामला बन गई, क्योंकि खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम, 2006 के तहत असुरक्षित खाद्य पदार्थ का निर्माण, भंडारण या बिक्री कानून के दायरे में कार्रवाई का आधार बन सकता है।

पहली जांच के नतीजों से असहमति जताते हुए कंपनी ने अपील की। इसके बाद नियमानुसार नमूने को रेफरल फूड लैबोरेटरी में भेजा गया, जहां दोबारा परीक्षण किया गया। आमतौर पर ऐसी व्यवस्था इसलिए होती है, ताकि किसी नमूने की जांच को लेकर उठे सवालों का स्वतंत्र प्रयोगशाला परीक्षण के माध्यम से पुनर्मूल्यांकन किया जा सके। कंपनी की अपील के बाद हुई इस जांच से मामले में राहत मिलने की संभावना थी, लेकिन रेफरल लैब की रिपोर्ट भी कंपनी के पक्ष में नहीं रही। दूसरी जांच में भी नमूना असुरक्षित पाया गया। इस तरह पहली और दूसरी, दोनों प्रयोगशालाओं की रिपोर्ट में खाद्य सुरक्षा मानकों से जुड़ी गंभीर आपत्तियां सामने आईं।

रेफरल लैब की रिपोर्ट में इस बार पॉलीन्यूक्लियर एरोमैटिक हाइड्रोकार्बन यानी पीएएच की मौजूदगी दर्ज की गई। पीएएच कई रासायनिक यौगिकों का समूह है। खाद्य और पेय पदार्थों में ऐसे रासायनिक तत्वों की मौजूदगी को लेकर सुरक्षा मानकों का पालन आवश्यक होता है। इस समूह के कुछ यौगिकों को स्वास्थ्य के लिहाज से चिंता का विषय माना जाता है। हालांकि, किसी नमूने में पीएएच की मौजूदगी का पता चलना और उससे होने वाले संभावित स्वास्थ्य प्रभावों का आकलन करना अलग-अलग विषय हैं। इसके लिए संबंधित यौगिक की पहचान, उसकी मात्रा और जोखिम के स्तर से जुड़ी विस्तृत जानकारी जरूरी होती है। उपलब्ध नियामकीय जानकारी के अनुसार, इस मामले में दूसरी जांच में पीएएच की मौजूदगी को नमूने के असुरक्षित पाए जाने का आधार बनाया गया।

दोनों प्रयोगशालाओं की रिपोर्ट सामने आने के बाद एफएसएसएआई ने बिसलेरी इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड के खिलाफ अभियोजन की मंजूरी दे दी। खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम, 2006 के तहत दी गई इस मंजूरी का मतलब है कि अब संबंधित अधिकारियों को कंपनी के खिलाफ कानूनी कार्रवाई और मुकदमे की प्रक्रिया आगे बढ़ाने का अधिकार मिल गया है। नियामक कार्रवाई के इस चरण में जांच रिपोर्ट और अन्य उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर मामला अदालत तक पहुंच सकता है। अदालत में संबंधित पक्षों को अपना पक्ष रखने और साक्ष्य प्रस्तुत करने का अवसर मिलेगा। इसके बाद ही यह तय होगा कि कानून का उल्लंघन हुआ है या नहीं और यदि हुआ है तो उसके लिए कौन जिम्मेदार है।

यहां यह स्पष्ट करना जरूरी है कि अभियोजन की मंजूरी किसी कंपनी को दोषी ठहराने के समान नहीं होती। यह कानूनी प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण कदम है, जिसके बाद मामले की सुनवाई और निर्णय न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में आते हैं। कंपनी को भी अपना बचाव प्रस्तुत करने का पूरा अवसर मिलेगा। इसलिए इस मामले में अंतिम निष्कर्ष अदालत की सुनवाई और उपलब्ध साक्ष्यों के मूल्यांकन के बाद ही सामने आएगा। बिसलेरी से जुड़ा यह मामला इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि पैकेज्ड ड्रिंकिंग वाटर का इस्तेमाल देशभर में बड़ी संख्या में लोग करते हैं। घरों, कार्यालयों, होटलों, यात्रा और सार्वजनिक स्थानों पर बोतलबंद पानी को सुविधाजनक विकल्प के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। उपभोक्ता आमतौर पर ब्रांड की पहचान और पैकेजिंग के आधार पर उत्पाद की गुणवत्ता पर भरोसा करते हैं। ऐसे में किसी चर्चित ब्रांड के नमूने का दो अलग-अलग प्रयोगशाला जांचों में असुरक्षित पाया जाना बोतलबंद पानी की गुणवत्ता जांच व्यवस्था और निगरानी को लेकर भी चर्चा का विषय बन गया है।

खाद्य सुरक्षा नियामक की जिम्मेदारी केवल किसी शिकायत के बाद कार्रवाई करने तक सीमित नहीं है, बल्कि बाजार में उपलब्ध खाद्य और पेय पदार्थों की गुणवत्ता पर लगातार नजर रखना भी इसका महत्वपूर्ण हिस्सा है। पैकेज्ड ड्रिंकिंग वाटर के मामले में स्रोत से लेकर प्रसंस्करण, पैकेजिंग और वितरण तक निर्धारित मानकों का पालन जरूरी होता है। पानी की शुद्धता के साथ उसमें मौजूद रासायनिक तत्वों की जांच भी महत्वपूर्ण है। इस तरह की जांच उपभोक्ताओं को सुरक्षित उत्पाद उपलब्ध कराने और खाद्य कारोबार करने वाली कंपनियों की जवाबदेही सुनिश्चित करने में अहम भूमिका निभाती है।

मुंबई–अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना में बड़ी उपलब्धि: सूरत–बिलिमोरा सेक्शन में ओवरहेड इलेक्ट्रिफिकेशन सिस्टम ऊर्जीकृत



आर एस नेटवर्क। दिनेश चंद्र रावल

ठाणे : भारत की पहली बुलेट ट्रेन परियोजना ने एक और महत्वपूर्ण पड़ाव पार कर लिया है। मुंबई–अहमदाबाद बुलेट ट्रेन कॉरिडोर के सूरत–बिलिमोरा सेक्शन में 20 नवंबर 2026 को ओवरहेड इक्विपमेंट (OHE) सिस्टम को सफलतापूर्वक ऊर्जीकृत (एनर्जाइज) किया गया। यह कदम परियोजना में आगामी परीक्षण (टेस्टिंग) गतिविधियों की दिशा में एक बड़ी प्रगति माना जा रहा है।

तकनीकी टीमों की कड़ी निगरानी और सुरक्षा मानकों के अनुपालन के साथ छोटे-छोटे हिस्सों में चरणबद्ध तरीके से एनर्जाइजेशन की प्रक्रिया पूरी की जा रही है। इस सेक्शन के एलिवेटेड अलाइनमेंट पर अप और डाउन, दोनों लाइनें शामिल हैं। पूरे 508 किलोमीटर लंबे कॉरिडोर में विश्व स्तर की अत्याधुनिक 2 × 25 kV ओवरहेड ट्रैक्शन प्रणाली लगाई गई है। ट्रेनों के सुचारु संचालन के लिए कॉरिडोर में कुल 14 स्थानों पर ट्रैक्शन सब-स्टेशन (TSS) स्थापित किए गए हैं, जो नेशनल ग्रिड से बिजली प्राप्त करेंगे।

गुजरात के नवसारी जिले स्थित बिलिमोरा के पहले ट्रैक्शन सब-स्टेशन में कंट्रोल पैनल, चेंजओवर स्विच, ट्रांसफॉर्मर और सर्किट ब्रेकर बिल्डिंग के इंस्टॉलेशन का कार्य पूर्ण हो चुका है। गुजरात स्थित सब-स्टेशन को गुजरात एनर्जी ट्रांसमिशन कॉर्पोरेशन लिमिटेड (GETCO) के 220 kV अंबेठा ग्रिड सब-स्टेशन से बिजली की आपूर्ति मिलेगी, जिसकी संपूर्ण मॉनिटरिंग एक केंद्रीकृत कंट्रोल सेंटर से की जाएगी।

सूरत और बिलिमोरा के बीच लगभग 50 किलोमीटर लंबे इस एलिवेटेड सेक्शन में चार नदियों पर बने पुल और नेशनल हाईवे-53 (NH-53) पर निर्मित एक स्टील ब्रिज भी शामिल है। इसके अतिरिक्त, आसपास के रिहायशी क्षेत्रों को ध्वनि प्रदूषण से बचाने के लिए वायाडक्ट पर करीब 94,000 नॉइज़ बैरियर्स लगाए गए हैं।

ओवरहेड विद्युत प्रणाली के चालू होने के मद्देनजर परियोजना प्रशासन ने जन सुरक्षा संबंधी आवश्यक सलाह जारी की है। अलाइनमेंट के आसपास रहने वाले नागरिकों, यात्रियों और निर्माण श्रमिकों को सख्त हिदायत दी गई है कि वे ओवरहेड विद्युत उपकरणों के नजदीक न जाएं, उन्हें छूने का प्रयास न करें और इसके आसपास किसी भी प्रकार का अनधिकृत कार्य न करें।

भायंदर में राज्य उत्पाद शुल्क विभाग की बड़ी कार्रवाई: मुर्धा खाड़ी में अवैध शराब भट्टी पर छापा, 10 लाख से अधिक का माल जब्त



भायंदर। भायंदर पश्चिम के उत्तान रोड स्थित मिथागर के उत्तर में मुर्धा खाड़ी में राज्य उत्पाद शुल्क विभाग की कोंकण डिवीजन टीम ने एक बड़ी छापेमारी करते हुए अवैध हाथभट्टी शराब बनाने के ठिकाने को ध्वस्त कर दिया है। शुक्रवार, 20 नवंबर को की गई इस कार्रवाई में विभाग ने 10 लाख 1 हजार 860 रुपये मूल्य की तैयार शराब, कच्चा माल और एक नाव जब्त की है। राज्य उत्पाद शुल्क आयुक्त डॉ. राजेश देशमुख और कोंकण डिवीजन के उपायुक्त प्रदीप पवार के नेतृत्व में फ्लाइंग स्क्वाड ने यह अभियान चलाया। छापेमारी के दौरान मौके से 1,400 लीटर हाथभट्टी शराब, शराब बनाने में इस्तेमाल होने वाले 19 हजार रुपये के रसायन और परिवहन के लिए उपयोग की जाने वाली एक प्लास्टिक की नाव बरामद हुई, जिसे मौके पर ही नष्ट कर दिया गया। इस मामले में मुंबई निषेध अधिनियम, 1949 के तहत दो अलग-अलग मामले दर्ज किए गए हैं।

कर सलाहकार ने ओमेगा सेल्स कॉर्पोरेशन पर 59.81 लाख रुपये का जीएसटी लगाया

ठाणेः मित्रानंद ख्यालीराम मुंडियापी (74) ने वैशाली शिंदे द्वारा ठाणे के कपूरबावड़ी पुलिस स्टेशन के अधिकार क्षेत्र में स्थित वेस्टा सोसाइटी, लोंडा पैराडाइज, माजिवाड़ा में कर सलाहकार कंपनी ओमेगा सेल्स कॉर्पोरेशन को भुगतान किए गए 59 लाख 81 हजार 42 रुपये की धोखाधड़ी के संबंध में कपूरबावड़ी पुलिस स्टेशन में धोखाधड़ी का मामला दर्ज कराया है। ओमेगा सेल्स कॉर्पोरेशन कंपनी शिकायतकर्ता मित्रानंद ख्यालीराम मुंडियापी की है और इस कंपनी का जीएसटी (जीएसटी) 2020 से 2025 तक पांच वर्षों के लिए बकाया था। उक्त कर का भुगतान करने के लिए, मित्रानंद ने अपने आईडीबीआई बैंक और सारस्वत बैंक खातों से वैशाली शिंदे के एसबीआई बैंक में 59 लाख 81 हजार 42 रुपये जीएसटी के भुगतान हेतु स्थानांतरित किए । इसी बीच, वैशाली शिंदे ने जीएसटी कार्यालय में राशि का भुगतान किए बिना, शिकायतकर्ता को राशि का भुगतान करने का दिखावा करके धोखाधड़ी से गबन कर लिया । इस मामले में वैशाली शिंदे के खिलाफ कपूरबावड़ी पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज किया गया है। कपूरबावड़ी पुलिस मामले की आगे जांच कर रही है।

ठाणे में कैंसर पीड़ित की मौत के बाद बड़ा फर्जीवाड़ा: सिम कार्ड बदलकर क्रेडिट कार्ड से 5 लाख की ऑनलाइन खरीदारी, केयरटेकर पर संदेह

ठाणे। कपूरबावड़ी इलाके से एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है, जहाँ कैंसर से पीड़ित पति की मृत्यु के बाद अज्ञात व्यक्ति ने उनके बैंक खाते और सिम कार्ड से छेड़छाड़ कर करीब 5 लाख रुपये की ऑनलाइन खरीदारी कर ली। पीड़ित पत्नी माया अय्यर ने अपनी शिकायत में पति की देखभाल के लिए रखे गए केयरटेकर अभिषेक त्रिपाठी पर इस धोखाधड़ी का शक जताया है। मृतक विजय अय्यर को दिसंबर 2025 में कैंसर का पता चला था। उनकी देखभाल के लिए 14 जून 2026 को एक नर्सिंग ब्यूरो के जरिए 21 वर्षीय अभिषेक त्रिपाठी को नियुक्त किया गया था, जो सुबह 9 बजे से रात 9 बजे तक काम करता था। 1 जुलाई को विजय अय्यर का निधन हो गया, जिसके कुछ दिनों बाद केयरटेकर ने काम छोड़ दिया। जब पत्नी ने अंतिम संस्कार के बाद बैंक खाता और कार्ड बंद कराने के लिए संपर्क किया, तो 20 जुलाई को मिले क्रेडिट कार्ड स्टेटमेंट से पता चला कि उनके पति के ईमेल के जरिए 4,78,059 रुपये का लेनदेन हुआ है।

ठाणे के लोकमान्य नगर में दिनदहाड़े चोरी: शौचालय की खिड़की से घर में घुसे चोर ने 5 लाख के गहने और 50 हजार नकद उड़ाए

ठाणे। लोकमान्य नगर पाड़ा नंबर 2 स्थित वर्धायनी अपार्टमेंट में गुरुवार दोपहर को एक सनसनीखेज चोरी का मामला सामने आया है। चोर ने दिनदहाड़े घर में ताला बंद होने के बावजूद शौचालय की खिड़की का शीशा तोड़कर अंदर प्रवेश किया और अलमारी का लॉकर खोलकर लगभग 5 लाख रुपये मूल्य की चार सोने की चूड़ियाँ (वजन पाँच तोला) और 50,000 रुपये नकद चुरा लिए।

शिकायतकर्ता पार्वतीबेन गुरुवार दोपहर करीब 3:30 बजे मुख्य दरवाजा और सुरक्षा दरवाजा बंद कर घर से बाहर गई थीं। जब वह शाम करीब 7:15 बजे लौटीं, तो मुख्य ताले सुरक्षित थे, लेकिन बेडरूम की अलमारी खुली और सामान बिखरा हुआ था। उनके बेटे रितेश सत्रा के घर पहुँचने पर जाँच करने पर पता चला कि शौचालय की खिड़की का शीशा टूटा हुआ था और वहाँ एक चप्पल व काली टोपी भी मिली है। इस मामले में वर्तकनगर पुलिस स्टेशन में अज्ञात चोर के खिलाफ मामला दर्ज कर आगे की छानबीन की जा रही है।

अंधेरी रेलवे स्टेशन RPF पोस्ट के पाँचों जवानों ने मुख्य साजिशकर्ता को बचाने के लिए दाँव पर लगाई नौकरी!

घटना के दिन मुख्य साजिशकर्ता अंधेरी पोस्ट पर पहले से था मौजूद, मोबाइल CDR और लोकेशन की जाँच से खुल सकते हैं कई राज !

आर एस नेटवर्क। सुजीत मिश्र

मुंबईः पश्चिम रेलवे के मुंबई मंडल स्थित अंधेरी रेलवे स्टेशन के RPF पोस्ट पर 27 अक्टूबर को सामने आया कथित गुटखा कांड अब केवल पाँच RPF जवानों की विभागीय कार्रवाई तक सीमित नहीं रह गया है। इस पूरे प्रकरण में सबसे बड़ा सवाल उस कथित मुख्य साजिशकर्ता की भूमिका को लेकर है जिसे बचाने के लिए क्या पाँच जवानों ने अपनी नौकरी तक दाँव पर लगा दी?

इस मामले में मुख्यालय अटैच किए गए सब-इंस्पेक्टर ललित त्रिपाठी, हेड कॉन्स्टेबल ओम प्रकाश गुर्जर तथा कॉन्स्टेबल मोनू, शिवरत्न और कृष्ण कुमार गुर्जर की भूमिका जाँच के दायरे में है। आरोप है कि 27 अक्टूबर को अवैध गुटखा पकड़े जाने के बाद तीन आरोपियों को कथित तौर पर पैसे लेकर छोड़ दिया गया लेकिन इस पूरे घटनाक्रम में उस व्यक्ति की भूमिका का सवाल अब भी बना हुआ है जिसे कथित तौर पर इस प्रकरण का मुख्य साजिशकर्ता बताया जा रहा है।

इस प्रकरण का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि कथित मुख्य साजिशकर्ता घटना के दिन अंधेरी RPF पोस्ट पर पहले से मौजूद



था। यदि यह दावा सही है तो उसकी मौजूदगी, गतिविधियों और पाँचों जवानों के साथ उसके संपर्कों की जाँच प्राथमिकता से होनी चाहिए थी। आखिर घटना के दिन पोस्ट पर मौजूद इस व्यक्ति की भूमिका की पूरी पड़ताल हुई या नहीं?

इस मामले में दावा किया जा रहा है कि कथित मुख्य साजिशकर्ता, पाँचों RPF कर्मियों और शिकायतकर्ता के बीच कुल 82 बार व्हाट्सऐप पर बातचीत हुई। इसके अलावा पनवेल, भाईंदर और घाटकोपर में मुलाकातों की बात भी सामने आई है। यदि इन दावों में तथ्य हैं तो सवाल उठता है कि इन संपर्कों और मुलाकातों का घटनाक्रम से क्या संबंध था? क्या इनकी तारीख, समय और परिस्थितियों का मिलान जाँच में किया गया? क्या संबंधित मोबाइल नंबरों के CDR और उपलब्ध लोकेशन रिकॉर्ड का विश्लेषण हुआ?

इस पूरे प्रकरण में 20 लाख रुपये की कथित रिश्वत का आरोप भी सामने आया है। मंडल के सिक्योरिटी कमिश्नर रजत कुंडगीर को जाँच सौंपी गई थी। जाँच रिपोर्ट में कथित रिश्वत के आरोपों की पुष्टि करने वाला साक्ष्य नहीं मिलने की बात कही गई है। लेकिन इसी रिपोर्ट में यह भी सामने आया कि गुटखा मामले के आरोपी को नियमानुसार नहीं छोड़ा गया था।

यहीं से जाँच की गंभीरता पर सवाल खड़े होते हैं। यदि आरोपी को नियमों के विरुद्ध छोड़ा गया तो इसके पीछे किसका निर्देश था? किसकी सहमति थी? और किसने इस पूरी कार्रवाई में भूमिका निभाई? इन सवालों के जवाब केवल पाँच जवानों को मुख्यालय अटैच करने से नहीं मिलेंगे।

जाँच रिपोर्ट में उल्लेख है कि RPF जवानों पर आरोप लगाने वाले व्यक्ति ने बाद में अपना बयान बदल दिया। यक्ष प्रश्न यह है कि मुख्य साजिशकर्ता के प्रभाव में आकर बयान बदला गया? यदि ऐसा है तो बयान बदलने के पीछे दबाव, प्रलोभन या किसी अन्य परिस्थिति की स्वतंत्र जाँच क्यों नहीं होनी चाहिए?

आरोप लगाने के बाद बयान वापस लेने वाले व्यक्ति की भूमिका और उसके बयान बदलने की परिस्थितियों की भी कानून के मुताबिक जाँच होनी चाहिए।

अब विभाग के सामने पाँच बड़े सवाल

1. घटना के दिन कथित मुख्य साजिशकर्ता अंधेरी RPF पोस्ट पर मौजूद था तो उसकी भूमिका की कितनी गहराई से जाँच हुई?
2. 82 बार कथित व्हाट्सऐप संपर्कों की तारीख और समय का घटनाक्रम से मिलान किया गया या नहीं?
3. पनवेल, भाईंदर और घाटकोपर में हुई बताई जा रही मुलाकातों की स्वतंत्र पुष्टि हुई या नहीं?
4. 20 लाख रुपये की कथित रिश्वत के आरोपों की जाँच किन डिजिटल और वित्तीय साक्ष्यों के आधार पर की गई?
5. शिकायतकर्ता ने अपना बयान बदला तो उसके पीछे की परिस्थितियों की जाँच क्यों नहीं कराई गई?

सिर्फ पाँच जवानों को अटैच करना काफी नहीं, पूरे नेटवर्क की जाँच जरूरी

पश्चिम रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों को इस मामले में केवल निलंबन, अटैचमेंट या विभागीय खानापूर्ति तक सीमित नहीं रहना चाहिए। घटना के दिन की ड्यूटी, पोस्ट पर मौजूदगी, संबंधित मोबाइल नंबरों के वैधानिक रूप से प्राप्त CDR, उपलब्ध लोकेशन रिकॉर्ड और डिजिटल साक्ष्यों की स्वतंत्र जाँच कराई जानी चाहिए।

यदि किसी ने अपने पद का दुरुपयोग किया है, किसी आरोपी को अनुचित लाभ पहुँचाया है या जाँच को प्रभावित करने का प्रयास किया है तो उसके खिलाफ साक्ष्यों के आधार पर कठोर कानूनी और विभागीय कार्रवाई होनी चाहिए।

अब पश्चिम रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों से सीधा सवाल है क्या अंधेरी गुटखा कांड की जाँच में केवल पाँच जवानों तक पहुँचकर फाइल बंद कर दी जाएगी या उस कथित मुख्य साजिशकर्ता तक भी जाँच पहुँचेगी जिसकी भूमिका पर इतने गंभीर सवाल उठ रहे हैं?

इस मामले में सच्चाई सामने आनी चाहिए, चाहे विभाग में किसी का भी पद या प्रभाव कितना ही बड़ा क्यों न हो।

प्रधानमंत्री मोदी की अपील का असर! सात महीने में सोने का आयात 40% घटा

भारत ने 16.46 अरब डॉलर की विदेशी मुद्रा बचाई : शंकर ठक्कर

ठाणे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा गैर-जरूरी सोने की खरीदारी से बचने की अपील का असर अब देश के आयात आंकड़ों में दिखाई देने लगा है। अप्रैल से अक्टूबर 2026 के दौरान भारत के सोने के आयात बिल में करीब 40 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। इससे देश को लगभग 16.46 अरब डॉलर की विदेशी मुद्रा की बचत हुई है। यह जानकारी कॉन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय मंत्री एवं अखिल भारतीय खाद्य तेल व्यापारी महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष शंकर ठक्कर ने दी।

ठाणे के दिनेश चंद्र रावल के अनुसार, कैट के राष्ट्रीय महामंत्री एवं दिल्ली के चांदनी चौक से सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने इस गिरावट का स्वागत करते हुए बताया कि अप्रैल-अक्टूबर 2026 के दौरान भारत का सोना आयात 41.24 अरब डॉलर से घटकर 24.78 अरब डॉलर रह गया। इस तरह देश ने करीब 16.46 अरब डॉलर की विदेशी मुद्रा बचाई है।

खंडेलवाल के मुताबिक, आयात में आई यह कमी सरकार के 'राष्ट्र प्रथम' दृष्टिकोण के प्रति जनता की बढ़ती भागीदारी को दर्शाती है। राष्ट्रीय आर्थिक प्राथमिकताओं के समर्थन में उपभोक्ताओं के व्यवहार में आए बदलाव अब ठोस आर्थिक परिणामों के रूप में सामने आ रहे हैं।

अक्टूबर में आयात में 62.6 प्रतिशत की गिरावट

आंकड़ों के अनुसार, अक्टूबर 2026 में सोने के आयात में और अधिक गिरावट दर्ज की गई। अक्टूबर 2025 में जहां 14.72 अरब डॉलर का सोना आयात किया गया था, वहीं अक्टूबर 2026 में यह घटकर 5.51 अरब डॉलर रह गया। इस प्रकार सालाना आधार पर सोने के आयात में लगभग 62.6 प्रतिशत की कमी आई है।

शंकर ठक्कर ने कहा कि हाल ही में लखनऊ में आयोजित एक कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा की गई अपील का असर इन आंकड़ों में स्पष्ट दिखाई दे रहा है। उन्होंने इसे उपभोक्ताओं में बढ़ती 'नेशन फर्स्ट' भावना का उदाहरण बताया।

पिछले वर्षों में लगातार बढ़ा था सोने का आयात

ठक्कर ने बताया कि पिछले कुछ वर्षों में भारत का सोना आयात लगातार ऊंचे स्तर पर रहा है। वित्त वर्ष 2025-26 में देश ने करीब 71.98 अरब डॉलर मूल्य का सोना आयात किया था, जबकि वित्त वर्ष 2024-25 में यह आंकड़ा 58.01 अरब डॉलर था। मौजूदा रुझानों के आधार पर कैट का अनुमान है कि वित्त वर्ष 2026-27 में भारत का कुल सोना आयात घटकर 35 से 40 अरब डॉलर के बीच रह सकता है।

कैट के राष्ट्रीय अध्यक्ष बी.सी. भार्तिया ने कहा कि प्रधानमंत्री की अपील का उद्देश्य केवल सोने की खरीदारी कम करना नहीं, बल्कि राष्ट्रीय हित में विवेकपूर्ण उपभोग को बढ़ावा देना भी था। उन्होंने कहा कि लोगों की सकारात्मक प्रतिक्रिया देश की आर्थिक प्राथमिकताओं के प्रति बढ़ती जागरूकता को दर्शाती है।

वहीं, ऑल इंडिया ज्वैलर्स एंड गोल्डस्मिथ फेडरेशन (एआईजेजीएफ) के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज अरोड़ा ने कहा कि सोना भारतीय संस्कृति, विवाह परंपरा, पारिवारिक बचत और सामाजिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। लेकिन देश की मांग का बड़ा हिस्सा आयात से पूरा होने के कारण विदेशी मुद्रा पर दबाव पड़ता है। ऐसे में सोने की खरीदारी में संयम बरतने से विदेशी मुद्रा भंडार के बेहतर प्रबंधन, व्यापार घाटे को नियंत्रित करने और देश की आर्थिक स्थिरता को मजबूत करने में मदद मिल सकती है।

संपादकीय

सोशल मीडिया न बने विद्रूपता का चेहरा

इसमें दो राय नहीं कि सोशल मीडिया समाज में सहज-सरल संवाद व मुखर अभिव्यक्ति का माध्यम बना है। लेकिन इसमें संपादक नामक संस्था न होने के कारण यह माध्यम धीरे-धीरे अराजक सामग्री, हिंसक अभिव्यक्ति और अश्लीलता का प्रसारक व पोषक बनता जा रहा है। दरअसल, इन कंपनियों का प्रारूप कुछ इस तरह बनाया गया है कि सामाजिक मर्यादाओं का अतिक्रमण करने वाली और बच्चों के मन-मस्तिष्क पर बुरा असर डालने वाली सामग्री दर्शकों का ध्यान ज्यादा खींचती है। कुछ समय पहले सोशल मीडिया माध्यमों पर बच्चों के यौन-शोषण से जुड़ी सामग्री के विज्ञापनों के प्रसारण को लेकर सरकार ने सख्त रवैया अपनाया था। बाकायदा मेटा को इस बाबत नोटिस भी दिया गया था। तब भी इन कंपनियों की जवाबदेही और निगरानी व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न लगे थे। विडंबना ही है कि हिंसक, अश्लील व सनसनी फैलाने वाली सामग्री को दर्शकों की ज्यादा प्रतिक्रिया मिलती है, जो इन कंपनियों के अर्थशास्त्र का आधार भी है। विडंबना यह भी है कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों का एल्गोरिद्म उपयोगकर्ताओं की अभिरुचि और प्रतिक्रिया के चलते ऐसी सामग्री का अधिक प्रसार करने लगता है। अब सरकार की प्रतिक्रिया व कुछ प्रबुद्ध लोगों के प्रतिरोध के बाद इंस्टाग्राम ने अपने कंटेंट रिकमेंडेशन सिस्टम में बदलाव लाने की बात कही है। इसके अंतर्गत दावा किया जा रहा है कि एआई की मदद से अश्लील व हिंसक सामग्री की संस्तुति को उपयोगकर्ताओं तक पहुंचने से पहले ही हटाने का प्रयास किया जाएगा। लेकिन सवाल यह है कि क्या ऐसी सामग्री को बढ़ावा देने में कंपनी की कोई भूमिका होती है? यदि नहीं, तो इसे कौन बढ़ावा देता है? सवाल यह भी है कि प्लेटफॉर्म पर सामग्री की निगरानी करने वाला एल्गोरिद्म भारतीय परिवेश में वर्जित सामग्री को लेकर अपेक्षित संवेदनशीलता दिखा पाएगा? बहुत संभव है कि सोशल मीडिया पर सूचनाओं व कार्यक्रमों का स्वरूप निर्धारित करने में पश्चिमी समाज का दृष्टिकोण प्रभावी होता हो। तो क्या एआई आधारित निगरानी व्यवस्था समस्या का संपूर्ण समाधान दे पाएगी?

वास्तव में इस बात की संभावना कम ही नजर आती है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित फिल्टरिंग व्यवस्था सोशल मीडिया पर अश्लील व आपत्तिजनक सामग्री पर पूरी तरह नियंत्रण लगा सकेगी। मशीन मानवीय अहसासों को पूरी तरह नहीं समझ सकती। इसलिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के साथ मानवीय निगरानी और शिकायतों के शीघ्र निस्तारण का तंत्र भी बने। अब तो जो पश्चिमी देश कल तक सोशल मीडिया का गुणगान करते नहीं अघाते थे, वे भी इससे बच्चों में पनपती विकृतियों की हकीकत समझने लगे हैं। ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, स्कॉटलैंड आदि देशों ने एक निर्धारित उम्र के किशोरों की सोशल मीडिया तक पहुंच पर रोक लगाई है। न्यू मेक्सिको में एक जूरी ने मेटा को इस बात के लिए जवाबदेह ठहराया कि उसके प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध वयस्क सामग्री तक बच्चों की पहुंच बनी हुई है, जिससे उनके जीवन में यौन अपराधियों से खतरा बढ़ गया है। लेकिन भारत जैसे देशों में सोशल मीडिया के बच्चों के जीवन पर घातक प्रभावों के बावजूद नियामक कानून न होने से कोई ठोस कार्रवाई नहीं हो पाती है। मांग की जा रही है कि एक निर्धारित आयु से अधिक उम्र के बच्चे ही सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म तक पहुंच बना सकें। विडंबना यह भी है कि बच्चों को संस्कार अब माता-पिता व शिक्षक नहीं, बल्कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों का दोहन करने वाले स्वार्थी तत्व दे रहे हैं, जो भारतीय जीवन-मूल्यों व संस्कारों से मेल नहीं खाते। आज सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्मों पर इतनी अश्लील व द्विअर्थी सामग्री का प्रवाह है कि हमारे किशोर आपराधिक प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख हो रहे हैं। सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभावों के चलते आज बच्चों के नायक व आदर्श बदल गए हैं। उनका नजरिया बदल रहा है। अश्लील सामग्री की उपलब्धता ने ब्रह्मचर्य के भारतीय दर्शन को ताक पर रख दिया है। इसका प्रभाव बच्चों के शैक्षिक प्रदर्शन व एकाग्रता पर भी पड़ेगा। दुखद है कि बच्चे इंटरनेट पर उपलब्ध अश्लील सामग्री से अपरिपक्व उम्र में रूबरू हो रहे हैं। फलतः अल्पवयस्कों में यौन अपराधों की वृद्धि घातक स्तर तक पहुंच रही है। इस प्रवृत्ति पर नियंत्रण के लिए घर और स्कूल में बच्चों को सोशल मीडिया के स्याह पहलुओं से अवगत कराना जरूरी है।

भारत जापान की नई रणनीतिक धूरी से बढ़ती वैश्विक प्रतिष्ठा

> जापान के साथ रणनीतिक विश्वास, क्वाड जैसे मंचों पर सहयोग, हिंद-प्रशांत की स्थिरता और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सुधार के लिए पारस्परिक समर्थन इसी व्यापक कूटनीतिक दृष्टि के हिस्से हैं। दोनों देशों ने एक-दूसरे की स्थायी सदस्यता की दावेदारी का समर्थन भी दोहराया है।

19 नवंबर 2026 को टोक्यो में हुई चैथी भारत-जापान 2+2 विदेश एवं रक्षा मंत्रिस्तरीय वार्ता केवल दो देशों के बीच एक कूटनीतिक बैठक नहीं थी, बल्कि बदलती विश्व-व्यवस्था में भारत की बढ़ती भूमिका का सशक्त संकेत थी। भारत की ओर से रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह और विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर तथा जापान की ओर से विदेश मंत्री तोशिमित्सु मोतेगी और रक्षा मंत्री शिंजिरो कोइजुमी ने जिस व्यापक रणनीतिक दृष्टि के साथ संवाद किया, उसने भारत-जापान संबंधों को सुरक्षा, तकनीक, समुद्री सहयोग, आर्थिक सुरक्षा और वैश्विक शासन के नए आयामों से जोड़ा है। इस वार्ता का सबसे महत्वपूर्ण संदेश यह है कि भारत अब केवल वैश्विक शक्ति-संतुलन का दर्शक नहीं, बल्कि उसे आकार देने वाली शक्ति बन रहा है। जापान के साथ बढ़ता सहयोग इसी परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। दोनों देशों ने स्वतंत्र, खुले, समावेशी और नियम-आधारित हिंद-प्रशांत की प्रतिबद्धता दोहराई तथा समुद्री और वायु क्षेत्र की निगरानी, सूचना-साझेदारी, खोज एवं बचाव, साइबर सुरक्षा, एआई तथा रक्षा उद्योग में सहयोग को आगे बढ़ाने पर सहमति जताई। भारत में जापानी आत्मरक्षा बलों द्वारा फायरिंग रेंज के उपयोग की दिशा में समझौता और 'डिजाइन विद जापान, मेक इन इंडिया' के तहत रक्षा औद्योगिक सहयोग को आगे बढ़ाने की सहमति इस साझेदारी को घोषणाओं से निकालकर व्यावहारिक धरातल पर ले जाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।यहां रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है। भारत की रक्षा नीति अब केवल हथियार खरीदने तक सीमित नहीं है, उसका लक्ष्य देश को रक्षा उत्पादन, तकनीक, अनुसंधान और निर्यात की दृष्टि से सक्षम बनाना है। हाल ही में रक्षा मंत्री



ने बताया कि भारत का रक्षा उत्पादन 1.80 लाख करोड़ रुपये के रिकॉर्ड स्तर तक पहुंच चुका है और रक्षा निर्यात 38,000 करोड़ रुपये के उच्चतम स्तर पर पहुंचा है। जापान के साथ रक्षा-तकनीक और औद्योगिक सहयोग इस आत्मनिर्भरता को अंतरराष्ट्रीय तकनीकी साझेदारी से जोड़ सकता है। दूसरी ओर डॉ. एस. जयशंकर भारत की उस विदेश नीति के प्रमुख सूत्रधारों में हैं जिसने भारत को 'किसी एक खेमे' की शक्ति के बजाय अपने हितों और सिद्धांतों के आधार पर विश्व के विभिन्न शक्ति-केंद्रों के साथ संवाद करने वाली प्रभावशाली शक्ति बनाया है। जापान के साथ रणनीतिक विश्वास, क्वाड जैसे मंचों पर सहयोग, हिंद-प्रशांत की स्थिरता और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सुधार के लिए पारस्परिक समर्थन इसी व्यापक कूटनीतिक दृष्टि के हिस्से हैं। दोनों देशों ने एक-दूसरे की स्थायी सदस्यता की दावेदारी का समर्थन भी दोहराया है। लेकिन इस पूरी तस्वीर को समझने के लिए इसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की व्यापक विदेश नीति और 'विकसित भारत' के संकल्प से जोड़कर देखना आवश्यक है। प्रधानमंत्री की विदेश नीति में सुरक्षा और अर्थव्यवस्था अलग-अलग विषय नहीं हैं। आज भारत जिस देश से रक्षा तकनीक लेता है, उसके साथ व्यापार बढ़ाता है। जहां निवेश आकर्षित करता है, वहां भारतीय उद्योग के लिए बाजार भी खोजता है और जहां रणनीतिक सहयोग करता है, वहां भारतीय प्रतिभा, तकनीक और संस्कृति की प्रतिष्ठा भी स्थापित करता है। यही विदेश नीति को आर्थिक शक्ति और राष्ट्रीय प्रतिष्ठा से जोड़ने की नई भारतीय शैली है। 19 नवंबर को ही नई दिल्ली में फिक्की के शताब्दी समारोह में प्रधानमंत्री मोदी ने उद्योग जगत के सामने इसी दृष्टि को अत्यंत स्पष्टता से रखा। फिक्की का सम्मेलन 'भारत 2047' की थीम पर हुआ और इसमें उद्योग जगत, राजनयिकों, नीति-निर्माताओं और वैश्विक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रधानमंत्री ने उद्योग से कहा कि अगले 20 वर्षों के प्रत्येक दीर्घकालिक निवेश निर्णय का आधार 'इंडिया फर्स्ट' होना चाहिए। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि भारत का विशाल घरेलू बाजार उद्योग का 'कम्फर्ट जोन' नहीं बनना चाहिए, बल्कि वैश्विक बाजारों में प्रतिस्पर्धा का आत्मविश्वास पैदा करने वाला आधार बनना चाहिए। यहीं टोक्यो की 2+2 बैठक और फिक्की के मंच का अद्भुत संबंध दिखाई देता है। एक ओर राजनाथ सिंह और जयशंकर भारत की सुरक्षा और कूटनीतिक शक्ति को विश्व में विस्तार दे रहे हैं, दूसरी ओर प्रधानमंत्री मोदी भारतीय उद्योग को विश्व बाजार में उतरने का आह्वान कर रहे हैं। अर्थात् भारत की विदेश नीति का अगला चरण केवल 'भारत के लिए दुनिया' नहीं, बल्कि 'दुनिया के लिए भारत' बनाने का चरण है। प्रधानमंत्री का संदेश केवल उद्योगपतियों के लिए नहीं है। विकसित भारत का निर्माण सरकार अकेले नहीं कर सकती। सरकार दिशा और वातावरण तैयार कर सकती है, लेकिन आर्थिक शक्ति उद्योग पैदा करता है, नवाचार युवा पैदा करते हैं, उत्कृष्टता वैज्ञानिक और पेशेवर पैदा करते हैं तथा भारत की प्रतिष्ठा सामान्य नागरिक के व्यवहार से भी बनती है। इसलिए आज आवश्यकता है कि भारतीय उद्योगपति केवल भारत में सफल होने की मानसिकता से आगे बढ़कर विश्व बाजारों में भारतीय ब्रांड की पहचान स्थापित करें। प्रधानमंत्री ने फिक्की में वैश्विक ग्राहकों की जरूरतों को समझने, स्थानीय बाजारों के अनुरूप उत्पाद बनाने, वैश्विक मानकों को अपनाने और मजबूत वितरण नेटवर्क विकसित करने पर विशेष जोर दिया। यह संदेश भारतीय उद्योग के लिए आर्थिक नीति से अधिक राष्ट्रीय दायित्व का संदेश है। इसी प्रकार प्रत्येक नागरिक का योगदान भी महत्वपूर्ण है। एक भारतीय जब ईमानदारी से अपना कार्य करता है, कानून का सम्मान करता है, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करता है, स्वच्छता और अनुशासन अपनाता है, भारतीय उत्पादों की गुणवत्ता बढ़ाने में योगदान देता है और दुनिया के सामने भारत की सकारात्मक छवि प्रस्तुत करता है, तब वह अनजाने में भारत की 'सॉफ्ट पावर' को मजबूत करता है।

विश्वगुरु बनने का अर्थ केवल उपदेश देना नहीं, बल्कि दुनिया को अपने आचरण, ज्ञान, तकनीक, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और मानवीय मूल्यों से प्रभावित करना है। भारत-जापान संबंध इस यात्रा का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। जापान तकनीक, पूंजी, गुणवत्ता, अनुशासन और विनिर्माण संस्कृति का प्रतीक है, भारत विशाल बाजार, युवा मानव संसाधन, डिजिटल क्षमता, प्रतिभा और नवाचार की शक्ति रखता है। दोनों की क्षमताएं एक-दूसरे की पूरक हैं। रक्षा उद्योग से लेकर सेमीकंडक्टर, महत्वपूर्ण खनिज, स्वच्छ ऊर्जा, डिजिटल कनेक्टिविटी, साइबर सुरक्षा और एआई तक सहयोग के नए क्षेत्र दोनों देशों को आर्थिक और रणनीतिक रूप से अधिक मजबूत कर सकते हैं। वर्ष 2027 इस साझेदारी के लिए विशेष महत्व रखता है। भारत-जापान राजनयिक संबंधों की स्थापना के 75 वर्ष पूरे होंगे और दोनों देशों ने इसे 'इंडिया-जापान ईयर ऑफ शेयर्ड हार्जिन्स' के रूप में मनाने का निर्णय किया है। यह केवल स्मृतियों का उत्सव नहीं होना चाहिए, बल्कि साझा भविष्य की नई पटकथा लिखने का अवसर होना चाहिए। भारत के सामने आज एक ऐतिहासिक अवसर है। प्रधानमंत्री मोदी का 'विकसित भारत 2047' केवल सरकारी कार्यक्रम नहीं, बल्कि राष्ट्रीय संकल्प है। स्वयं प्रधानमंत्री ने फिक्की में कहा कि विकसित भारत कोई नारा नहीं, बल्कि सभी भारतीयों द्वारा जीया जाने वाला संकल्प है। यही इस समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है-सरकार अपनी जिम्मेदारी निभाए, उद्योग वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार हो, युवा नवाचार का नेतृत्व करें, किसान उत्पादकता बढ़ाएं, वैज्ञानिक नई तकनीक विकसित करें और प्रत्येक नागरिक अपने कार्यक्षेत्र में श्रेष्ठता तथा ईमानदारी का उदाहरण बने। टोक्यो की 2+2 बैठक हमें भारत की रणनीतिक शक्ति का संदेश देती है और फिक्की का मंच भारत की आर्थिक शक्ति का। इन दोनों को यदि भारतीय प्रतिभा, उद्योग, संस्कृति और नागरिक कर्तव्य से जोड़ दिया जाए तो भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा नई ऊंचाइयों पर पहुंच सकती है।

सरोकार

मां की बेबसी और रोटियों के पेड़ का सपना

बचपन की दुनिया छोटी जरूर होती है, लेकिन उसकी इच्छाएं बहुत बड़ी होती हैं। किसी बच्चे के लिए खिलौना खुशी का कारण हो सकता है तो किसी के लिए मिठाई, नए कपड़े या दोस्तों के साथ खेलना। मगर जब घर में अभाव अपना डेरा जमा लेते हैं तो बच्चे की सारी इच्छाएं सिमटकर दो वक्त की रोटी तक रह जाती हैं। भूख की पीड़ा उम्र नहीं देखती। वह मासूम चेहरे से मुस्कान छीन लेती है और सपनों में भी उसी चीज की तलाश करवाती है, जिसकी कमी हकीकत में सबसे ज्यादा महसूस होती है।

दस वर्षीय राजू भी ऐसे ही अभावों के बीच पल रहा था। घर की हालत अच्छी नहीं थी। मां किसी तरह परिवार का गुजारा कर रही थी। कभी घर में थोड़ी सब्जी आ जाती तो कभी सूखी रोटियों के सहारे दिन कटता। कई बार तो भोजन का इंतजाम करना भी मुश्किल हो जाता था। पिछले तीन दिनों से राजू को रोटी नहीं मिली थी। भूख लगने पर वह मां के पास जाता और कुछ खाने के लिए मांगता, लेकिन मां कभी प्याज तो कभी मूली उसके हाथ में पकड़ा देती। वह बच्चे को बहलाने की कोशिश करती, मगर राजू का मन रोटी के बिना नहीं मानता था।

उस दिन भी मां ने उसके सामने गाजर रख दी। राजू ने उसे देखते ही मुंह फेर लिया। उसने कहा कि उसे गाजर नहीं खानी, उसे रोटी चाहिए। मां ने समझाया कि जो मिला है, उसे खा ले। लेकिन बच्चे की भूख किसी समझाइश से शांत होने वाली नहीं थी। वह बार-बार रोटी मांगता रहा। आखिरकार मां का धैर्य जवाब दे गया। गरीबी, लाचारी और घर की परिस्थितियों से परेशान मां ने उसे डांट दिया और गुस्से में उसकी पिटाई भी कर दी। वह झुंझलाकर बोली, 'रोटियां क्या पेड़ पर लगती हैं, जो जाकर तोड़ लाऊं?'

राजू चुप हो गया। उसे शायद मां की परेशानी का अंदाजा नहीं था, लेकिन इतना जरूर समझ में आ गया था कि रोटी मांगने से भी उसे रोटी नहीं मिलने वाली। वह आंसू बहाता हुआ घर के भीतर बनी छोटी-सी कोठरी में चला गया। वहां पुराने कपड़ों और बिस्तरों का ढेर पड़ा था। वह उसी पर मुंह छिपाकर लेट गया। पेट में भूख की वजह से मरोड़ उठ रही थी। आंखों में आंसू थे और मन में एक ही सवाल कि आखिर रोटी इतनी मुश्किल से क्यों मिलती है? कुछ देर तक वह सिसकता रहा। फिर थकान ने उसे अपनी आगोश में ले लिया।

नींद में राजू एक अनोखी दुनिया में पहुंच गया। उसने देखा कि वह एक विशाल जंगल में खड़ा है। वहां न मिट्टी थी, न पत्थर और न ही साधारण पेड़-पौधे। पूरा जंगल गूंथे हुए आटे से बना था। कहीं आटे के ऊंचे-ऊंचे पहाड़ थे तो कहीं आटे की नदियां बह रही थीं। पेड़ों के तने भी आटे के थे और उनकी डालियों पर गोल-मटोल रोटियां लटक रही थीं। कुछ रोटियां छोटी थीं तो कुछ बड़ी। कुछ पर सुनहरी सिकाई के निशान थे और कुछ बिल्कुल ताजी बनी हुई लग रही थीं।

यह दृश्य देखकर राजू खुशी से उछल पड़ा। उसे लगा जैसे उसकी सबसे बड़ी इच्छा पूरी हो गई हो। उसने मन ही मन सोचा कि अब उसे कभी भूखा नहीं रहना पड़ेगा। वह जितनी चाहे रोटियां खा सकता है और घर ले जाकर मां को भी खिला सकता है। वह तेजी से एक पेड़ के पास पहुंचा और रोटी तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन रोटियां इतनी ऊंचाई पर थीं कि उसकी पहुंच से बाहर थीं।

उसने कई बार उछलकर उन्हें पकड़ने की कोशिश की। कभी पंजों के बल खड़ा हुआ तो कभी पेड़ के तने पर चढ़ने का प्रयास किया, लेकिन हर बार नाकाम रहा। तभी उसे मां की याद आई। उसे याद था कि घर में जब कोई सामान ऊंचाई पर रखा होता था तो मां उसे अपने कंधों पर बैठा देती थी। उसके सहारे वह आसानी से सामान उतार लेता था। राजू को लगा कि मां यहां आ जाए तो दोनों मिलकर ढेर सारी रोटियां तोड़ सकते हैं।

वह उत्साह से मां को आवाज लगाने लगा। 'मां! जल्दी आओ! देखो, यहां रोटियों के कितने सारे पेड़ हैं। तुम आ जाओगी तो हम सारी रोटियां तोड़ लेंगे। फिर घर में कभी रोटी की कमी नहीं होगी। मां, सुन रही हो न? जल्दी आओ।'

वह एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक दौड़ता रहा। उसकी आवाज जंगल में गूंजती रही। उसे उम्मीद थी कि मां उसकी पुकार सुनकर जरूर आएगी। लेकिन काफी देर बीत जाने के बाद भी मां नहीं आई। वह बार-बार पीछे मुड़कर देखता, मगर दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं देता। आखिरकार उसकी आवाज धीमी पड़ गई। वह थककर एक पेड़ के नीचे बैठ गया। मां का इंतजार करते-करते उसकी आंखें बोझिल होने लगीं।

कुछ देर बाद उसे फिर नींद आ गई। इस बार उसने देखा कि पेड़ों की डालियों से रोटियां अपने आप टूटकर नीचे गिर रही हैं। वे गर्म और मुलायम रोटियां उसके शरीर पर आकर फैलने लगीं। धीरे-धीरे रोटियों ने चादर का रूप ले लिया। ठंड से कांप रहे राजू को ऐसा लगा जैसे किसी ने उसे गर्म लिहाफ में लपेट दिया हो। उसने उस चादर को दोनों हाथों से पकड़कर अपने कंधों तक खींचा और सुकून से करवट बदलकर सो गया।

लेकिन राजू को क्या पता था कि उसकी मां वास्तव में उसके पास आ चुकी थी। कोठरी में बेटे को रोते-रोते सोया देखकर मां का दिल भर आया। उसे अपने व्यवहार पर पछतावा हो रहा था। वह जानती थी कि बच्चे ने कोई गलत मांग नहीं की थी। आखिर भूख लगने पर रोटी मांगना उसका अधिकार ही तो था। मगर गरीबी ने मां के हाथ बांध दिए थे। वह अपने बच्चे की छोटी-सी इच्छा भी पूरी नहीं कर पा रही थी।

मां ने चुपचाप पुराने बिस्तरों में से एक फटी-पुरानी गर्म चादर निकाली। उसने बड़े प्यार से उसे राजू के शरीर पर ओढ़ा दिया, ताकि ठंड में उसका बच्चा कांपता न रहे। कुछ पल तक वह बेटे के चेहरे को निहारती रही। उसके माथे पर हाथ फेरने की इच्छा हुई, लेकिन कहीं उसकी नींद न टूट जाए, इसलिए वह चुपचाप खड़ी रही।

AI के भरोसे बैठी दुनिया के लिए AI ही बना सबसे बड़ा खतरा! एक हफ्ते में 7 बड़े झटके से क्या सबक मिला?

दुनिया जिस आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) को भविष्य की सबसे बड़ी ताकत मानकर अपनी अर्थव्यवस्था, सुरक्षा और प्रशासन की बुनियाद बना रही है, वही तकनीक अब एक नई वैश्विक चुनौती के रूप में सामने आ रही है। सवाल सिर्फ यह नहीं है कि AI इंसानों की जगह कितने काम कर सकता है, बल्कि यह भी है कि क्या दुनिया अपनी पूरी व्यवस्था कुछ गिनी-चुनी तकनीकी कंपनियों, स्वचालित प्रणालियों और एल्गोरिदम के भरोसे छोड़कर एक बड़े जोखिम की ओर बढ़ रही है?देखा जाये तो अमेरिका में एक ही सप्ताह के भीतर विमानन, बैंकिंग, संचार और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी तकनीकी व्यवस्थाओं में आई रुकावटों ने डिजिटल दुनिया की कमजोरियों को उजागर कर दिया है। माइक्रोसॉफ्ट आउटलुक की सेवाएं प्रभावित हुईं, जेपी मॉर्गन चेज के लेनदेन में बाधा आई, एप्पल की सेवाओं में रुकावट हुई और अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी (NSA) का गोपनीय नेटवर्क भी ठप पड़ गया। वहीं, फेडरल एविएशन एडमिनिस्ट्रेशन के नेटवर्क में आई समस्या के कारण हजारों उड़ानें प्रभावित हुईं और करीब 12,462 उड़ानें रद्द करनी पड़ीं।

इन घटनाओं के पीछे तकनीकी गड़बड़ियों के अलग-अलग कारण सामने आए हैं। कहीं पुराने सॉफ्टवेयर की खामियां थीं, तो कहीं नेटवर्क उपकरणों में आई खराबी और नए अपडेट के कारण सेवाएं बाधित हुईं। अमेरिकी कांग्रेस के अधिकारियों को दी गई जानकारी में यह भी बताया गया कि AI मॉडल ने कई सुरक्षा खामियों की पहचान की थी। उन्हें जल्द ठीक करने के लिए बड़े पैमाने पर सॉफ्टवेयर में बदलाव (पैच) किए गए, जिनसे कुछ नई तकनीकी समस्याएं पैदा हो गईं। यानी साइबर हमलों से बचाने में मदद करने वाला AI भी तब परेशानी का कारण बन सकता है, जब उसकी पहचान की गई खामियों को जल्दबाजी में ठीक करने की कोशिश की जाए।

यहां सबसे महत्वपूर्ण पहलू तकनीक पर बढ़ती निर्भरता का है। आज बैंकिंग से लेकर विमानन, अस्पतालों, सरकारी संचार और राष्ट्रीय सुरक्षा तक सब कुछ डिजिटल नेटवर्क से जुड़ा है। ऐसे में किसी एक महत्वपूर्ण नेटवर्क या सॉफ्टवेयर की विफलता का असर हजारों किलोमीटर दूर बैठे लोगों तक पहुंच सकता है। देखा जाये तो स्वचालन ने काम की गति बढ़ाई है, लेकिन उसी अनुपात में एक छोटी तकनीकी गलती के बड़े स्तर पर फैलने का खतरा भी बढ़ा दिया है। साथ ही इस बहस का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू मानव अस्तित्व और उसकी रचनात्मक क्षमता से जुड़ा है। वर्ष 2026 के लिए कैम्ब्रिज डिक्शनरी द्वारा 'Human' शब्द को चुनना भी AI के बढ़ते प्रभाव के बीच इंसान की पहचान और महत्व को रेखांकित करता है। आज मशीनें लेखन, संगीत, फिल्म निर्माण और दूसरे रचनात्मक कार्यों में इंसानों की नकल करने लगी हैं। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यह है कि जब मशीनें इंसानों की तरह रचनात्मक काम करने लगेंगी, तब मानवीय प्रतिभा, मौलिकता और मेहनत का महत्व और उसका आर्थिक मूल्य कैसे बरकरार रहेगा?

देखा जाये तो AI केवल नौकरियों के स्वरूप को नहीं बदल रहा, बल्कि वह उस व्यवस्था को भी चुनौती दे रहा है जिसमें इंसान की कल्पनाशीलता, अनुभव, भावनाएं और मौलिक विचार आर्थिक गतिविधियों का आधार रहे हैं। मशीन से तैयार सामग्री की बढ़ती उपलब्धता के बीच वास्तविक मानवीय रचनात्मकता को एक अलग पहचान देने की मांग भी सामने आ रही है। इसलिए AI को बिना सार्वजनिक निगरानी और सुरक्षा प्रावधानों के पूरी छूट नहीं दी जा सकती।

दूसरी ओर, भारत के लिए इन दोनों घटनाक्रमों का संदेश बेहद महत्वपूर्ण है। भारत दुनिया की सबसे तेजी से डिजिटल होती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। यूपीआई, डिजिटल बैंकिंग, आधार आधारित सेवाएं, सरकारी डिजिटल प्लेटफॉर्म, रेलवे, विमानन और स्वास्थ्य सेवाएं बड़े पैमाने पर तकनीकी नेटवर्क पर निर्भर हैं। भारत की डिजिटल शक्ति जितनी तेजी से बढ़ेगी, उसकी तकनीकी सुरक्षा और परिचालन क्षमता का महत्व भी उतना ही बढ़ेगा। भारत को केवल विदेशी AI मॉडल और वैश्विक क्लाउड कंपनियों का उपभोक्ता बनकर नहीं रहना चाहिए। अपने डेटा सेंटर, स्वदेशी AI मॉडल, साइबर सुरक्षा अनुसंधान, चिप निर्माण और महत्वपूर्ण डिजिटल ढांचे में अपनी क्षमता विकसित करना राष्ट्रीय रणनीति का हिस्सा होना चाहिए। अस्पतालों, बैंकिंग, रक्षा और आपातकालीन सेवाओं के लिए ऐसे वैकल्पिक नेटवर्क तैयार होने चाहिए, जो किसी वैश्विक कंपनी की सेवा बाधित होने पर भी काम करते रहें। जरूरी डिजिटल सेवाओं के लिए स्थानीय स्तर पर संचालित बैकअप व्यवस्था और नियमित आपदा परीक्षण अनिवार्य होने चाहिए।

साथ ही, AI से पैदा होने वाले जोखिमों का स्वतंत्र ऑडिट, सॉफ्टवेयर अपडेट की चरणबद्ध प्रक्रिया और महत्वपूर्ण प्रणालियों में मानवीय निगरानी जरूरी है।

नजरिया

मां जगद्धात्री : शक्ति, सौम्यता और सृष्टि के संरक्षण की अधिष्ठात्री देवी



उत्तराम्नाय ज्योतिष्पीठाधीश्वर शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती

भारतीय सनातन परंपरा में आदिशक्ति के अनेक स्वरूपों की उपासना की जाती है। कहीं मां दुर्गा महिषासुरमर्दिनी के रूप में अधर्म का नाश करती हैं तो कहीं मां काली काल और नकारात्मक शक्तियों का संहार करने वाली देवी के रूप में पूजित होती हैं। इन्हीं दिव्य स्वरूपों के बीच मां जगद्धात्री का स्वरूप अपनी विशेष आध्यात्मिक महत्ता रखता है। वे शक्ति की उस सात्विक चेतना का प्रतीक हैं, जो संपूर्ण संसार को धारण करती है, उसका पालन करती है और सृष्टि में संतुलन बनाए रखती है। उनका स्वरूप उग्रता के बजाय शांति, धैर्य, करुणा, आत्मसंयम और संरक्षण का संदेश देता है। पश्चिम बंगाल में दुर्गा पूजा और काली पूजा के भव्य आयोजनों के बाद कार्तिक मास में मनाया जाने वाला जगद्धात्री पूजा उत्सव इसी दिव्य चेतना की आराधना का महत्वपूर्ण अवसर है। यह पर्व धार्मिक आस्था के साथ-साथ बंगाल की कला, संस्कृति, लोकपरंपरा और सामुदायिक एकता का भी अद्भुत परिचायक है।

जगद्धात्री पूजा का प्रमुख आयोजन कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को किया जाता है। इस वर्ष यह उत्सव 16 से 19 नवंबर तक आयोजित किया जा रहा है, जबकि मुख्य पूजन 18 नवंबर को नवमी के दिन संपन्न होगा। इस अवसर पर पश्चिम बंगाल के विभिन्न क्षेत्रों में मंदिरों, पूजा पंडालों और सार्वजनिक स्थलों पर मां की प्रतिमाएं स्थापित की जाती हैं। श्रद्धालु विधि-विधान से पूजा-अर्चना करते हैं और मां से परिवार, समाज तथा संपूर्ण संसार के कल्याण की कामना करते हैं। विशेष रूप से कृष्णनगर और चंदननगर में इस पर्व का स्वरूप अत्यंत भव्य दिखाई देता है। यहां दूर-दूर से श्रद्धालु और पर्यटक देवी के दर्शन करने तथा उत्सव की अद्भुत सजावट देखने पहुंचते हैं।

'जगद्धात्री' शब्द दो संस्कृत शब्दों 'जगत' और 'धात्री' से मिलकर बना है। जगत का अर्थ है संसार और धात्री का अर्थ है धारण करने वाली। इस प्रकार जगद्धात्री का अर्थ हुआ संपूर्ण ब्रह्मांड को धारण करने वाली देवी। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार मां जगद्धात्री ही वह आदिशक्ति हैं, जिनकी कृपा से संसार की व्यवस्था संचालित होती है। वे जीवों का पालन करती हैं और सृष्टि में धर्म तथा संतुलन की स्थापना करती हैं। उनका स्वरूप मनुष्य को यह प्रेरणा देता है कि जीवन में केवल शक्ति प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उस शक्ति का उपयोग संयम, विवेक और लोककल्याण के लिए करना भी आवश्यक है।

मां जगद्धात्री की प्रतिमा अत्यंत विशिष्ट और प्रतीकात्मक होती है। वे सिंह पर सवार चतुर्भुजा देवी हैं। उनके चार हाथों में शंख, चक्र, धनुष और बाण सुशोभित होते हैं। शंख को शुभता और दिव्य ध्वनि का प्रतीक माना जाता है, जबकि चक्र धर्म की रक्षा और अधर्म के विनाश का संकेत देता है। धनुष और बाण लक्ष्य के प्रति एकाग्रता, साहस और संकल्प का प्रतिनिधित्व करते हैं। देवी लाल रंग की साड़ी धारण करती हैं और उनके शरीर पर बहुमूल्य आभूषण सुशोभित होते हैं। उनका मुखमंडल शांत, तेजस्वी और करुणामय दिखाई देता है। सिंह पर विराजमान होने के बावजूद उनके स्वरूप में आक्रामकता के बजाय आत्मविश्वास और संतुलित शक्ति का भाव प्रमुख रहता है।

उनकी प्रतिमा का एक और महत्वपूर्ण पक्ष सिंह के नीचे दिखाई देने वाला हाथी है। इसे करिन्द्रासुर के रूप में दर्शाया जाता है। पौराणिक कथा के अनुसार महिषासुर ने देवी दुर्गा से युद्ध के दौरान स्वयं को बचाने के लिए हाथी का रूप धारण किया था, लेकिन देवी ने उसका भी संहार किया। जगद्धात्री की प्रतिमा में हाथी पर सिंह की विजय इसी प्रसंग की स्मृति कराती है। आध्यात्मिक व्याख्या में हाथी को अहंकार, मद और अनियंत्रित मन का प्रतीक माना गया है। मनुष्य का अहंकार जब उसकी बुद्धि पर हावी हो जाता है, तब वह सही और गलत का अंतर भूलने लगता है। देवी के चरणों में पराजित हाथी इस बात का प्रतीक है कि विवेक और चेतना के माध्यम से अहंकार को नियंत्रित किया जा सकता है। मां जगद्धात्री की आराधना इसलिए आत्मसंयम और आंतरिक विजय की साधना भी मानी जाती है।

बंगाल में जगद्धात्री पूजा के सार्वजनिक और भव्य आयोजन की परंपरा का संबंध अठारहवीं शताब्दी के नदिया जिले के कृष्णनगर से जोड़ा जाता है।

मालिक जयेश जगशी गाला हेतु प्रकाशक, मुद्रक **अश्विनी कुमार दुबे** द्वारा मोदी प्रिंटर्स, 24 बोमनजी लेन, फोर्ट, मुंबई-400001 (महाराष्ट्र) से मुद्रित क

वाराणसी के स्वामी विशुद्धानंद फाउंडेशन को मिली वैश्विक पहचान, GEMS Education के साथ जुड़ा विद्यालय

छह माह की व्यापक मूल्यांकन एवं ऑडिट प्रक्रिया के बाद हुआ चयन, GEMS Millennium Schools परिवार का बनेगा हिस्सा



आर एस नेटवर्क। डॉ. उदय शंकर भगत

वाराणसी। वाराणसी के स्वामी विशुद्धानंद फाउंडेशन द्वारा संचालित विद्यालय ने वैश्विक शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित GEMS Education ने छह माह तक चली व्यापक मूल्यांकन एवं ऑडिट प्रक्रिया के बाद विद्यालय का चयन GEMS Education School के रूप में किया है। इस साझेदारी के साथ विद्यालय अब GEMS Millennium Schools परिवार तथा विश्व के प्रमुख निजी विद्यालय नेटवर्क का हिस्सा बनेगा।

स्वामी विशुद्धानंद फाउंडेशन के मैनेजिंग ट्रस्टी प्रदीप बिश्नोई ने प्रेस वार्ता में यह जानकारी देते हुए बताया कि यह उपलब्धि विद्यालय के समर्पित नेतृत्व, प्रतिबद्ध शिक्षकों, अभिभावकों के सहयोग और विद्यार्थियों की निरंतर मेहनत का परिणाम है। विद्यालय के हाल ही में आयोजित वार्षिक समारोह में GEMS के निदेशक डॉ. अशोक पांडेय ने संस्थान की कार्यप्रणाली और शैक्षिक प्रतिबद्धताओं का प्रत्यक्ष अवलोकन किया था। यह चयन विद्यालय की वर्तमान उपलब्धियों के साथ उसके भविष्य की संभावनाओं में GEMS Education के विश्वास को भी दर्शाता है।

इस साझेदारी के तहत विद्यालय GEMS Millennium Schools ब्रांड परिवार के अंतर्गत GEMS Education के प्रशासनिक एवं प्रबंधन ढांचे से जुड़ेगा। यह केवल ब्रांड विस्तार अथवा फ्रेंचाइजी व्यवस्था तक सीमित नहीं होगा, बल्कि GEMS Education विद्यालय के दैनिक प्रशासन और संचालन में भी सक्रिय भूमिका निभाएगा।

विद्यालय के शैक्षिक विकास के लिए विभिन्न क्षेत्रों में निवेश किया जाएगा। इसमें वैश्विक मानकों के अनुरूप शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाना, कक्षाओं एवं शिक्षण स्थलों को आधुनिक और रचनात्मक स्वरूप देना, शिक्षकों एवं कर्मचारियों की दक्षता का विकास, आधारभूत संरचना का उन्नयन तथा विद्यार्थियों के लिए विभिन्न पाठ्यक्रम विकल्प उपलब्ध कराना शामिल है। इसके साथ ही प्रत्येक विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास को प्राथमिकता दी जाएगी।

विद्यालय प्रबंधन ने स्पष्ट किया कि शिक्षा की गुणवत्ता के साथ विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की सुरक्षा, स्वास्थ्य और कल्याण के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता सर्वोच्च प्राथमिकता बनी रहेगी।

GEMS Education के वैश्विक नेटवर्क से जुड़ने के बाद विद्यालय के विद्यार्थियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नए विचारों, शैक्षिक अवसरों, अनुभवों और विभिन्न देशों के विद्यार्थियों के साथ संवाद एवं मित्रता स्थापित करने का अवसर मिलेगा। इस नेटवर्क में विश्वभर के दो लाख से अधिक विद्यार्थी और 176 से अधिक राष्ट्रीयताओं का प्रतिनिधित्व है। भारत के 10 राज्यों में भी इस नेटवर्क की उपस्थिति है। इस साझेदारी के माध्यम से वाराणसी की समृद्ध संस्कृति, परंपरा और विरासत को भी वैश्विक शैक्षिक मंच पर पहचान मिलेगी।

इस अवसर पर GEMS Education के ग्रुप चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर (इंडिया) फ्रांसिस जोसेफ ने विद्यालय प्रबंधन, शिक्षकों, अभिभावकों और विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि वाराणसी में यह एक नई शैक्षिक यात्रा की शुरुआत है। GEMS Education का उद्देश्य विद्यार्थियों को ऐसी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है, जो उन्हें केवल परीक्षाओं के लिए नहीं, बल्कि जीवन की चुनौतियों और वैश्विक दुनिया के लिए भी तैयार करे। उन्होंने कहा कि शिक्षक किसी भी महान विद्यालय की आधारशिला होते हैं। GEMS Education शिक्षकों के विकास, नेतृत्व क्षमता और उनकी प्रेरणादायी भूमिका को मजबूत करने के लिए सहयोग प्रदान करेगा। उन्होंने विद्यालय परिवार के साथ मिलकर संस्थान के गौरवशाली भविष्य के निर्माण की प्रतिबद्धता भी व्यक्त की।

GEMS Education के साथ यह साझेदारी स्वामी विशुद्धानंद फाउंडेशन के विद्यालय के लिए नए शैक्षिक युग की शुरुआत मानी जा रही है। वैश्विक अनुभव, आधुनिक शिक्षण पद्धतियों, उन्नत आधारभूत सुविधाओं और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य के साथ विद्यालय अब स्थानीय संस्कृति और अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण का समन्वय स्थापित करने की दिशा में आगे बढ़ेगा।

'एक बादशाह ने दौलत के दम पर गरीबों की मोहब्बत का उड़ाया मजाक' : नसीरुद्दीन शाह

लोकसत्ता अभिजात लिटफेस्ट में सजी उर्दू की महफिल, गालिब, इकबाल, फैज और साहिर की रचनाओं ने बांधा समां



ठाणे। प्रसिद्ध अभिनेता नसीरुद्दीन शाह ने लोकसत्ता अभिजात लिटफेस्ट के दूसरे संस्करण में उर्दू साहित्य की खूबसूरती, गहराई और विविधता से श्रोताओं को रूबरू कराया। ठाणे के गडकरी रंगायतन में आयोजित उनकी विशेष 'उर्दू महफिल' में दर्शकों की भारी भीड़ उमड़ी। कार्यक्रम की सभी प्रवेशिकाएं एक दिन पहले ही समाप्त हो गई थीं और सभागृह पूरी तरह खचाखच भरा हुआ था।

महफिल के दौरान नसीरुद्दीन शाह ने मशहूर शायर साहिर लुधियानवी की नज्म 'ताजमहल' की पंक्तियों के माध्यम से बादशाहों की दौलत और आम इंसान के प्रेम के बीच के अंतर को बेहद प्रभावशाली अंदाज में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि एक बादशाह ने दौलत का सहारा लेकर गरीबों की मोहब्बत का मजाक उड़ाया है। उनकी गंभीर और प्रभावशाली आवाज में साहिर के शब्दों ने सभागृह में मौजूद श्रोताओं को कुछ क्षणों के लिए भावविभोर कर दिया।

लोकसत्ता अभिजात लिटफेस्ट के मंच पर सजी यह महफिल महज एक सांस्कृतिक प्रस्तुति नहीं थी, बल्कि उर्दू साहित्य और उसकी समृद्ध परंपरा से परिचित कराने वाला एक विशेष साहित्यिक पाठ भी थी। नसीरुद्दीन शाह ने उर्दू के चार महान शायरों अल्लामा इकबाल, मिर्जा गालिब, फैज अहमद फैज और साहिर लुधियानवी की चुनिंदा रचनाओं का पाठ किया। प्रत्येक रचना के साथ उसके शब्दों का अर्थ, ऐतिहासिक संदर्भ और साहित्यिक महत्व भी समझाया।

उन्होंने शुरुआत अल्लामा इकबाल की प्रसिद्ध नज्म 'सैर-ए-फलक' से की। इसके बाद फैज अहमद फैज की 'दुआ' के माध्यम से सत्य की खोज, सवाल पूछने का साहस और आशावाद जैसे विषयों को सामने रखा। उनकी प्रस्तुति में शब्दों की गहराई और भावनाओं की अभिव्यक्ति ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

नसीरुद्दीन शाह ने कहा कि कई लोगों को उर्दू एक कठिन और गंभीर भाषा लगती है। कुछ लोग इसे केवल प्रेम और विरह की भाषा मानते हैं, जबकि वास्तव में उर्दू साहित्य का संसार इससे कहीं अधिक व्यापक और विविधतापूर्ण है। उन्होंने इस बात पर भी सवाल उठाया कि जिस भाषा का जन्म और विकास इसी देश की धरती पर हुआ, उसे विदेशी भाषा बताने के प्रयास क्यों किए जा रहे हैं। मिर्जा गालिब की रचनाओं के माध्यम से उन्होंने उनके व्यक्तित्व, जीवनशैली और तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों पर भी रोशनी डाली। उन्होंने बताया कि गालिब किस तरह अपनी पेंशन संबंधी परेशानी को लेकर तत्कालीन बादशाह बहादुर शाह जफर के सामने अपनी बात रखते थे। उनके व्यक्तित्व के हास्य, शौक और आत्मविश्वास से जुड़े प्रसंगों ने महफिल को और रोचक बना दिया।

कार्यक्रम के अंतिम चरण में नसीरुद्दीन शाह ने कविता से कहानी की ओर रुख किया। उन्होंने इम्तियाज अली ताज की हास्यप्रधान कहानी 'चाचा छक्कन' प्रस्तुत की। इस दौरान उनके अभिनय और किस्सागोई के अंदाज ने सभागृह में हंसी के फव्वारे छोड़ दिए। गंभीर साहित्यिक चर्चा से शुरू हुई महफिल का समापन हास्य और मनोरंजन के शानदार माहौल में हुआ।

उल्लेखनीय है कि नसीरुद्दीन शाह की यह उर्दू महफिल पहले मुंबई विश्वविद्यालय के कलिना परिसर में आयोजित होने वाली थी, लेकिन विवाद के कारण उस समय कार्यक्रम नहीं हो पाया था। अब लोकसत्ता अभिजात लिटफेस्ट के मंच पर उन्हें अपनी प्रस्तुति देने का अवसर मिला। कार्यक्रम के समापन पर दर्शक अपनी जगहों से खड़े हो गए और लंबे समय तक तालियों की गड़गड़ाहट से सभागृह गूंजता रहा। यह स्वागत केवल एक अभिनेता के लिए नहीं, बल्कि उर्दू साहित्य और भारतीय भाषाओं की साझा सांस्कृतिक विरासत के प्रति सम्मान का प्रतीक बन गया।

सारनाथ के बाद अब वाराणसी के चार और प्रमुख स्थानों पर सजेगा चटोरी चौक, मैदागिन में निर्माण शुरू

आरएसनेटवर्क। उदय शंकर भगत

वाराणसी। काशी की पारंपरिक खानपान संस्कृति को नई पहचान देने और स्ट्रीट फूड विक्रेताओं को व्यवस्थित स्थान उपलब्ध कराने की दिशा में नगर निगम ने एक और पहल की है। सारनाथ में चटोरी चौक की सफलता के बाद अब शहर के चार अन्य प्रमुख स्थानों मैदागिन, कैंटोनमेंट, कबीर नगर और लहरतारा में चटोरी चौक विकसित किए जाएंगे। इनमें मैदागिन में निर्माण कार्य शुरू हो चुका है, जबकि शेष तीन स्थानों पर भी जल्द ही काम शुरू होने की तैयारी है। महापौर अशोक कुमार तिवारी ने बताया कि शहर के विभिन्न हिस्सों में बिखरे स्ट्रीट फूड विक्रेताओं को सुव्यवस्थित मंच उपलब्ध कराने और लोगों को स्वच्छ वातावरण में बनारसी व्यंजनों का स्वाद देने के उद्देश्य से इस परियोजना का विस्तार किया जा रहा है। इसके तहत खाली और लंबे समय से उपेक्षित पड़ी सार्वजनिक जमीनों का कायाकल्प कर उन्हें आकर्षक फूड स्ट्रीट के रूप में विकसित किया जाएगा।

गौरतलब है कि सारनाथ की ऐतिहासिक विरासत के समीप 45 दुकानों के साथ विकसित किए गए पहले चटोरी चौक को स्थानीय नागरिकों के साथ देशी-विदेशी पर्यटकों का भी अच्छा प्रतिसाद मिल रहा है। यहां चाट, कचौड़ी, कुल्हड़ चाय सहित काशी के पारंपरिक व्यंजनों का स्वाद एक ही परिसर में उपलब्ध है। इसके अलावा स्वच्छ शौचालय, वॉशरूम, बैठने की उचित व्यवस्था और नियमित साफ-सफाई जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध कराई गई हैं।

नगर निगम अब इसी मॉडल को शहर के चार अन्य हिस्सों में लागू करने जा रहा है। इससे स्ट्रीट फूड कारोबार को व्यवस्थित पहचान मिलने के साथ छोटे दुकानदारों और विक्रेताओं को सम्मानजनक रोजगार के अवसर मिलेंगे। वहीं, सड़कों पर अनियंत्रित रूप से लगने वाली दुकानों और अतिक्रमण में कमी आने से यातायात व्यवस्था को भी सुगम बनाने में मदद मिलने की उम्मीद है।

महापौर अशोक कुमार तिवारी ने कहा कि काशी आने वाले पर्यटकों और शहरवासियों को स्वच्छ एवं सुरक्षित वातावरण में बनारसी जायके का आनंद उपलब्ध कराना नगर निगम का लक्ष्य है। सारनाथ चटोरी चौक की सफलता के बाद मैदागिन समेत चार नए स्थानों पर इस व्यवस्था का विस्तार किया जा रहा है। इससे स्ट्रीट वेंडरों को सम्मानजनक रोजगार मिलेगा और शहर की सुंदरता में भी वृद्धि होगी।

भिवंडी में 50.89 लाख रुपये का 70 किलो गांजा जब्त, दो गिरफ्तार

क्राइम ब्रांच की नारपोली क्षेत्र में बड़ी कार्रवाई, अर्टिगा कार और तीन मोबाइल फोन भी जब्त



भिवंडी। भिवंडी शहर में मादक पदार्थों की तस्करी और बिक्री पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस की कार्रवाई लगातार जारी है। इसी कड़ी में भिवंडी क्राइम ब्रांच ने नारपोली पुलिस थाना क्षेत्र में बड़ी कार्रवाई करते हुए 70 किलो गांजा जब्त किया है। जब्त गांजे की कीमत 50 लाख 89 हजार रुपये बताई गई है। इस मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है।

पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, भिवंडी क्राइम ब्रांच के वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक शीतल राऊत को गुप्त सूचना मिली थी कि काल्हेर से वल गांव के बीच पाइपलाइन रोड पर कुछ लोग गांजा लेकर आने वाले हैं। सूचना के आधार पर क्राइम ब्रांच की टीम ने बुधवार, 18 नवंबर को सुबह करीब छह बजे पूर्णा गांव की सीमा में जाल बिछाया।

इसी दौरान काल्हेर से वल गांव की ओर जा रही सफेद रंग की टूरिस्ट परमिट वाली अर्टिगा कार को पुलिस टीम ने संदेह के आधार पर रोका। तलाशी लेने पर कार से 70 किलो गांजा बरामद हुआ। पुलिस ने गांजे के साथ कार और तीन मोबाइल फोन भी जब्त कर लिए। इस मामले में पुलिस ने अभिषेक विजयशंकर मिश्रा (31), निवासी निलजे, डोंबिवली पूर्व और अजय रामअवतार चौरसिया (43), निवासी सावरकर नगर, ठाणे को गिरफ्तार किया है। दोनों आरोपियों के खिलाफ नारपोली पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज किया गया है।

गांजे के सप्लायर और खरीदारों की तलाश

आरोपी गांजा कहां से लेकर आए थे और इसे किसे बेचने वाले थे, इसकी जांच की जा रही है। इस नेटवर्क में अन्य कौन-कौन लोग शामिल हैं, इसका भी पता लगाया जा रहा है। मामले की आगे की जांच क्राइम ब्रांच के सहायक पुलिस निरीक्षक मिथुन भोईर कर रहे हैं।

एसआईआर अभियान के तहत रोहनिया विधायक ने बैरवन बूथ का किया निरीक्षण, युवाओं को मतदाता बनने के लिए किया प्रेरित



वाराणसी। रोहनिया विधायक डॉ. सुनील पटेल ने रविवार को रोहनिया विधानसभा क्षेत्र के ग्राम बैरवन स्थित प्राथमिक विद्यालय में बूथ संख्या 175 पर मतदाता विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रम का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने नए मतदाताओं के पंजीकरण की प्रक्रिया का जायजा लिया तथा दर्जनों युवाओं के फॉर्म-6 भरवाने की जानकारी प्राप्त की। साथ ही पात्र युवाओं को मतदाता सूची में अपना नाम दर्ज कराने के लिए प्रेरित किया।

विधायक डॉ. सुनील पटेल ने कहा कि मतदान लोकतंत्र का सबसे बड़ा अधिकार है और प्रत्येक पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में दर्ज होना लोकतंत्र की मजबूती के लिए आवश्यक है। उन्होंने संबंधित पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को निर्देश दिया कि मतदाता सूची को शुद्ध, सटीक और त्रुटिरहित बनाने के लिए पूरी गंभीरता से कार्य करें। कोई भी पात्र मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने से वंचित न रह जाए।

उन्होंने कार्यकर्ताओं से घर-घर संपर्क अभियान चलाने तथा मृतक एवं स्थायी रूप से स्थानांतरित मतदाताओं के नाम नियमानुसार हटवाने की प्रक्रिया में सहयोग करने की अपील की।

इस अवसर पर अपना दल (एस) के क्षेत्रीय अध्यक्ष डॉ. नरेंद्र पटेल, जिलाध्यक्ष युवा मंच मानस सिंह, ग्राम प्रधान प्रतिनिधि लाल बिहारी पटेल, राजकुमार वर्मा, विनोद पटेल, श्यामवली पटेल सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

बीएचयू के रसशास्त्र विभाग में छह दिवसीय सीएमई कार्यक्रम का समापन, आयुर्वेद शिक्षा और अनुसंधान को मजबूत बनाने पर जोर



वाराणसी। काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के आयुर्वेद संकाय के रसशास्त्र एवं भैषज्य कल्पना विभाग की ओर से शिक्षकों के लिए आयोजित छह दिवसीय सतत चिकित्सा शिक्षा (सीएमई) कार्यक्रम का समापन समारोह संपन्न हुआ। आयुष मंत्रालय की आयुर्ज्ञान योजना द्वारा प्रायोजित तथा राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ, नई दिल्ली द्वारा समन्वित इस कार्यक्रम में कुल 24 ज्ञानवर्धक सत्र आयोजित किए गए, जिनमें देश के प्रख्यात विद्वानों एवं विशेषज्ञों ने रसशास्त्र और भैषज्य कल्पना के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार साझा किए। समापन समारोह के मुख्य अतिथि एवं बीएचयू के कुलपति प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी ने कहा कि आयुर्वेद में शिक्षा और अनुसंधान को मजबूत बनाने के लिए इस प्रकार के शैक्षणिक कार्यक्रम महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने प्रतिभागियों से कार्यक्रम के दौरान अर्जित ज्ञान एवं अनुभवों को अपने-अपने संस्थानों में शिक्षण और अनुसंधान कार्यों में उपयोग करने का आह्वान किया। साथ ही विश्वविद्यालय की निरंतर प्रगति और विकास के लिए सभी सदस्यों से सामूहिक रूप से सक्रिय योगदान देने की अपील की।

विशिष्ट अतिथि कुलसचिव राजन श्रीवास्तव ने आयोजकों से आयुर्वेद के ज्ञान को जनसामान्य तक पहुंचाने पर जोर दिया। उन्होंने आयुर्वेदिक औषधियों को लेकर समाज में प्रचलित भ्रांतियों को दूर करने के लिए व्यापक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने जनजातीय औषधियों और इस क्षेत्र में आयुर्वेद की संभावनाओं पर भी प्रकाश डाला।

चिकित्सा विज्ञान संस्थान के निदेशक प्रो. संजय गुप्ता ने अध्यक्षीय संबोधन में विभिन्न विषयों के बीच अंतरविषयक सहयोग (क्रॉस डिसिप्लिनरी कोलैबोरेशन) के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि चिकित्सा एवं अनुसंधान के विभिन्न क्षेत्रों के बीच समन्वय से ज्ञान और शोध की नई संभावनाएं विकसित होती हैं। इस अवसर पर कुलपति प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी ने विभाग के नए मंजिल का विधिवत उद्घाटन भी किया। विभागाध्यक्ष एवं आयोजन सचिव प्रो. नम्रता जोशी ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया, जबकि कार्यक्रम के सह-समन्वयक डॉ. रोहित शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

रोहनिया विधायक ने मैकजेन लिमिटेड ग्रुप के स्मार्ट वेलनेस सेंटर का किया शुभारंभ, प्रदेश का पहला फ्रेंचाइजी सेंटर बना



वाराणसी। रोहनिया विधानसभा क्षेत्र के पंडितपुर हाईवे बाईपास स्थित हेरिटेज हॉस्पिटल के समीप मैकजेन लिमिटेड ग्रुप के स्मार्ट वेलनेस सेंटर का भव्य शुभारंभ किया गया। जिला संगठन मंत्री संगीता वर्मा एवं सुनीता पटेल की देखरेख में आयोजित उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि रोहनिया विधायक सुनील पटेल तथा विशिष्ट अतिथि पिंडरा ब्लॉक प्रमुख एवं संरक्षक रविशंकर सिंह ने सेंटर के संचालक मनोज कुमार कश्यप के साथ संयुक्त रूप से फीता काटकर उद्घाटन किया। आयोजकों के अनुसार, यह उत्तर प्रदेश का पहला फ्रेंचाइजी सेंटर है।

इस अवसर पर विधायक सुनील पटेल ने कहा कि वर्तमान समय में स्वस्थ जीवनशैली अपनाना प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता बन गई है। यह सेंटर क्षेत्र के लोगों को स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता, रोजगार और आर्थिक समृद्धि से जोड़ने का माध्यम बनेगा। वहीं, विशिष्ट अतिथि रविशंकर सिंह ने कहा कि वैज्ञानिक सोच और सही पोषण के माध्यम से गांव-गांव तक स्वास्थ्य जागरूकता पहुंचाई जा सकती है। ऐसे केंद्र युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

बताया गया कि वर्ष 2022 में हैदराबाद से लक्ष्मण मलावत के नेतृत्व में स्थापित मैकजेन लिमिटेड ग्रुप न्यूट्रास्यूटिकल उत्पादों, मैकजेन अकादमी, स्मार्ट वेलनेस सेंटर और जीएमसी क्लब सदस्यता के माध्यम से अपने नेटवर्क का विस्तार कर रहा है।

कार्यक्रम में कंपनी के आईपी पार्टनर झारखंड से कुंदन कुमार सिंह, हरियाणा से सूरज कटक, पश्चिम बंगाल से शुभजीत सखिंल तथा उत्तर प्रदेश से इंतखाब आलम, शिवकुमार वर्मा सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

दशाश्वमेध घाट पर शिव महिमा, काशी की आध्यात्मिक विरासत और स्वच्छ गंगा को समर्पित होगी देव दीपावली की महाआरती



आर एस नेटवर्क। डॉ. उदय शंकर भगत

वाराणसी। काशी के विश्वप्रसिद्ध प्राचीन दशाश्वमेध घाट पर इस वर्ष देव दीपावली का आयोजन भगवान शिव, मां गंगा की महिमा, काशी की आध्यात्मिक विरासत और स्वच्छ गंगा के संकल्प को समर्पित होगा। गंगोत्री सेवा समिति के तत्वावधान में आयोजित होने वाली महाआरती में धार्मिक परंपरा, आधुनिक तकनीक और पर्यावरण संरक्षण का अनूठा संगम देखने को मिलेगा। पर्यावरण-अनुकूल दीपदान के माध्यम से स्वच्छ गंगा का संदेश भी प्रसारित किया जाएगा।

गंगोत्री सेवा समिति के संस्थापक अध्यक्ष पं. किशोरी रमण दुबे बाबू महाराज एवं सचिव पं. दिनेश शंकर दुबे ने पत्रकार वार्ता में बताया कि देवताओं के स्वागत के लिए प्राचीन दशाश्वमेध घाट को भव्य रूप से सजाया जाएगा। भगवान शिव और मां गंगा की नगरी काशी की आध्यात्मिक परंपरा को समर्पित इस आयोजन में वैदिक विधि-विधान से मां गंगा का पूजन, स्तवन और 151 लीटर दूध से अभिषेक किया जाएगा। इसके माध्यम से गंगा के निर्मलीकरण और संरक्षण का संकल्प दोहराया जाएगा।

समिति के पदाधिकारियों ने बताया कि 36 वर्षों से चली आ रही परंपरा के अनुरूप आयोजित होने वाली महाआरती में गंगा तट पर सिंहासनारूढ़ मां गंगा की 108 किलोग्राम की अष्टधातु से निर्मित श्रृंगारिक प्रतिमा विशेष आकर्षण का केंद्र रहेगी। शास्त्रोक्त विधि से पूजन के साथ पूरे घाट को लगभग 500 किलोग्राम देशी एवं विदेशी फूलों से सजाया जाएगा।

इस वर्ष महाआरती में ऋद्धि-सिद्धि के स्वरूप में बेटियां नेतृत्व करेंगी, जो नारी शक्ति के सम्मान और सहभागिता का संदेश देंगी। आयोजन में 21 बटुकों के साथ 21 डमरू दल अपनी प्रस्तुतियों से धार्मिक वातावरण को भव्यता प्रदान करेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सुमेरु पीठ के शंकराचार्य पूज्य स्वामी नरेंद्रानंद सरस्वती करेंगे।

मां गंगा की महाआरती के पश्चात काशी के लोकप्रिय गीतकार कन्हैया दुबे केडी के संयोजन में सांस्कृतिक संध्या आयोजित होगी। देव दीपावली महोत्सव का संचालन गंगा सेवक एवं नमामि गंगे काशी क्षेत्र के संयोजक राजेश शुक्ला करेंगे। आयोजन में वाराणसी के जनप्रतिनिधियों, देश-विदेश से आमंत्रित अतिथियों तथा प्रतिष्ठित बैंकों के अधिकारियों की परिवार सहित सहभागिता रहेगी।

पत्रकार वार्ता में समिति के संरक्षक पं. कन्हैया त्रिपाठी, गंगेश्वरधर दुबे, संकठा प्रसाद, संजय यादव सहित समिति के अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे। देव दीपावली के अवसर पर गंगोत्री सेवा समिति द्वारा काशी के पौराणिक केदार घाट पर भी पं. संदीप कुमार दुबे के संयोजन में मां गंगा की भव्य महाआरती का आयोजन किया जाएगा। इस प्रकार दशाश्वमेध और केदार घाट पर धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक विरासत तथा गंगा संरक्षण का संदेश गुंजायमान होगा।

हिन्दी दैनिक
राष्ट्रीय स्वाभिमान

राष्ट्रीय स्वाभिमान
पत्र व्यवहार:रफ्तार इंडिया एक्सप्रेस, 31/33 पहला महला, पत्रावाला बिल्डिंग, वजु कोटक मार्ग लिंक शहीद भगतसिंह रोड, फोर्ट, मुंबई 400001, भ्र.ध्व. क्र.:9224733113
ईमेल:rastriyaswabhimaan@gmail com

04 मुंबई, सोमवार, 23 नवम्बर 2026 महाराष्ट्र

epaper.rashtriyaswabhimaan.in
www.rashtriyaswabhimaan.com

संविधान दिवस मनाने से अधिक जरूरी है संविधान को जीवन में उतारना : सुरेश जगताप

संविधान के मूल्यों की रक्षा के लिए जनजागृति और सामूहिक संघर्ष का आह्वान

मुंबई। भारतीय संविधान लागू होने के 76 वर्ष पूरे होने के अवसर पर देशभर में संविधान दिवस मनाया जा रहा है। इस दौरान विभिन्न कार्यक्रमों, भाषणों और आयोजनों के माध्यम से संविधान के महत्व को रेखांकित किया जाएगा। लेकिन सवाल यह है कि क्या केवल संविधान दिवस मनाना पर्याप्त है या फिर संविधान के मूल्यों को अपने जीवन और व्यवहार में उतारना भी जरूरी है? इसी महत्वपूर्ण विषय पर वरिष्ठ पत्रकार, प्रखर एवं विद्रोही विचारक तथा सामाजिक कार्यकर्ता सुरेश जगताप ने अपने विचार व्यक्त करते हुए संविधान के प्रति वास्तविक प्रतिबद्धता पर गंभीर सवाल उठाए।



सुरेश जगताप ने कहा कि आज सबसे बड़ी विडंबना यह है कि कुछ लोग दिन में संविधान की शपथ लेते हैं और व्यवहार में उसी संविधान के मूल सिद्धांतों के विपरीत कार्य करते हैं। संविधान दिवस मनाने और संविधान का वास्तविक पालन करने के बीच का अंतर आज गंभीर चिंता का विषय बन गया है।

उन्होंने कहा कि समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व और न्याय संविधान के चार प्रमुख आदर्श हैं, लेकिन व्यवहार में जाति, धर्म, धन और सत्ता के आधार पर भेदभाव की घटनाएं सामने आती रहती हैं। संविधान के मूल्यों को केवल भाषणों और औपचारिक आयोजनों तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए। उन्होंने इसे संविधान के प्रति बढ़ती उदासीनता और संवैधानिक चेतना के कमजोर होने का संकेत बताया।

जगताप के अनुसार, संविधान की वास्तविक शक्ति तभी कायम रह सकती है, जब आम नागरिक अपने अधिकारों, कर्तव्यों और संवैधानिक प्रावधानों को समझें। लोगों को केवल संविधान दिवस के आयोजनों तक सीमित रखने के बजाय उन्हें संविधान के प्रति जागरूक बनाना समय की मांग है।

उन्होंने कहा कि भारत रत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने देश को केवल एक संविधान नहीं दिया, बल्कि प्रत्येक नागरिक को सम्मान, अधिकार और समान अवसरों के साथ जीवन जीने का मार्ग प्रदान किया। इसलिए संविधान की रक्षा करना केवल किसी एक वर्ग या समुदाय की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक भारतीय का नैतिक और संवैधानिक दायित्व है।

उन्होंने आगे कहा कि संविधान कोई साधारण कानून की पुस्तक नहीं, बल्कि देश के लोकतांत्रिक जीवन का आधार और प्रत्येक नागरिक की गरिमा का संरक्षक है। यदि इसके मूल सिद्धांतों को कमजोर किया गया तो लोकतंत्र की बुनियाद भी प्रभावित होगी।

सार्वजनिक चर्चा सत्र में अपने विचार रखते हुए सुरेश जगताप ने आह्वान किया कि अब समय केवल संविधान दिवस मनाने का नहीं, बल्कि संविधान को समझने, उसके आदर्शों को अपनाने और अन्याय के विरुद्ध लोकतांत्रिक तरीके से आवाज उठाने का है।

उन्होंने कहा कि जहां भी अन्याय और असमानता दिखाई दे, वहां संवैधानिक मूल्यों के आधार पर आवाज उठानी चाहिए। समाज के सभी वर्गों में संविधान के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए व्यापक जनअभियान चलाना आवश्यक है। अंत में उनका स्पष्ट संदेश था कि संविधान दिवस केवल एक दिन का उत्सव नहीं, बल्कि पूरे वर्ष संवैधानिक मूल्यों को जीने का संकल्प होना चाहिए। संविधान बचाना है तो समाज को जागरूक बनाना होगा।

ठाणे में 31वां संगीत भूषण पंडित राम मराठे महोत्सव 27 नवंबर से, नि:शुल्क पास के लिए गडकरी रंगायतन में उमड़ी संगीत प्रेमियों की भीड़

ठाणे। ठाणे महानगरपालिका और अखिल भारतीय मराठी नाट्य परिषद (ठाणे शाखा) के संयुक्त तत्वावधान में 31वें 'संगीत भूषण पंडित राम मराठे मेमोरियल फेस्टिवल' का आयोजन 27 से 29 नवंबर 2026 तक राम गणेश गडकरी रंगायतन में किया जा रहा है। इस तीन दिवसीय शास्त्रीय संगीत महोत्सव के नि:शुल्क टिकट पाने के लिए रविवार (22 नवंबर) सुबह से ही गडकरी रंगायतन परिसर में संगीत प्रेमियों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी।



इस वर्ष प्रतिष्ठित 'संगीत भूषण पंडित राम मराठे राज्य स्तरीय पुरस्कार' वरिष्ठ संगीत कलाकार पंडित शैलेश भागवत को प्रदान किया जाएगा, जिसमें 51 हजार रुपये नकद, सम्मान पत्र, शॉल और श्रीफल शामिल हैं। इसके साथ ही युवा कलाकार हेमा उपासनी को 'यूथ अवॉर्ड' से सम्मानित किया जाएगा।

महोत्सव के पहले दिन शुक्रवार, 27 नवंबर को रात 8:00 बजे श्रुति मराठे के गायन से कार्यक्रम की शुरुआत होगी, जिसके बाद रात 8:30 बजे पद्म विभूषण डॉ. एन. राजम का वायलिन वादन होगा। दूसरे दिन शनिवार, 28 नवंबर को दोपहर 3:30 बजे भारत नाट्यमंदिर, पुणे द्वारा संगीत नाटक 'बंध रेशमाचे' का मंचन किया जाएगा। इसके पश्चात रात 8:00 बजे वेदश्री खादिलकर ओक और आदित्य ओक 'आशाताई एक सूरदासी' कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे तथा रात 9:30 बजे गायिका सावनी शेंडे की प्रस्तुति के साथ दूसरे दिन का समापन होगा।

समारोह के अंतिम दिन रविवार, 29 नवंबर को सुबह 11:00 बजे विदुषी नंदिनी बेडेकर और उनके शिष्य गान सरस्वती किशोरीताई अमोनकर की गायकी पर आधारित विशेष कार्यक्रम 'स्वरानुभूति' पेश करेंगे। शाम 4:00 बजे यति भागवत और स्वप्निल भिसे की तबला जुगलबंदी होगी, जिसके बाद शाम 5:00 बजे पंडित मुकुंदराज देव गायन, वादन और नृत्य के संगम पर आधारित 'अनुभूति' कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे। शाम 7:00 बजे ओमकार दादरकर, रात 8:30 बजे पंडित गिरीश संजगिरी और रात 10:00 बजे पंडित सुहास व्यास के शास्त्रीय गायन के साथ इस तीन दिवसीय महोत्सव का समापन होगा।

आयोजकों के अनुसार, यह पूरा महोत्सव दर्शकों के लिए नि:शुल्क है। महोत्सव के पास 22 नवंबर से राम गणेश गडकरी रंगायतन में उपलब्ध कराए गए हैं। सभागार में प्रवेश 'पहले आओ, पहले पाओ' के आधार पर दिया जाएगा, जबकि आगे की पहली पाँच कतारें आमंत्रित अतिथियों के लिए आरक्षित रहेंगी।

भिवंडी मनपा कर्मचारियों का फूटा गुस्सा, 8 दिन में मांगें पूरी नहीं हुईं तो होगा महामोर्चा

भिवंडी। भिवंडी-निजामपुर शहर महानगरपालिका के कर्मचारियों की लंबे समय से लंबित मांगों और समस्याओं को लेकर अब असंतोष खुलकर सामने आने लगा है। कामगार एकीकरण महासंघ ने मनपा प्रशासन के खिलाफ आर-पार की लड़ाई का ऐलान करते हुए आयुक्त अनमोल सागर को स्मरणपत्र सौंपा है। महासंघ ने चेतावनी दी है कि यदि आठ दिनों के भीतर मांगों पर सकारात्मक निर्णय लेकर चर्चा के लिए बैठक नहीं बुलाई गई, तो मनपा मुख्यालय पर महामोर्चा निकाला जाएगा। इसके बाद होने वाले आंदोलन की पूरी जिम्मेदारी मनपा प्रशासन की होगी। महासंघ के पदाधिकारियों के अनुसार, कर्मचारियों की विभिन्न लंबित मांगों के समाधान के लिए कई बार प्रशासन से पत्राचार किया गया, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है। 12 अक्टूबर 2026 को लिखित निवेदन देकर आयुक्त से चर्चा के लिए समय मांगा गया था। इसके बावजूद कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिला। इसके बाद 20 अक्टूबर 2026 को मनपा मुख्यालय पर शिड़टू मोर्चा निकाला गया था। उस समय अतिरिक्त आयुक्त श्री दराडे के साथ हुई बैठक में अधिकारियों ने दो से तीन दिनों के भीतर आयुक्त से मुलाकात करवाकर समस्याओं का समाधान करने का लिखित आश्वासन दिया था। महासंघ का आरोप है कि आश्वासन के बावजूद आज तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया।

ये हैं कर्मचारियों की प्रमुख मांगें

महासंघ ने सभी कामगारों और कर्मचारियों को छठे एवं सातवें वेतन आयोग के अंतर की बकाया राशि तत्काल देने, वर्ष 2005 के बाद मनपा सेवा में नियुक्त कर्मचारियों की एनपीएस के तहत काटी गई राशि उनके खातों में जमा कराने तथा सफाई कामगारों से संबंधित जांच एवं कार्रवाई में शासन के सरकारी निर्णय (जीआर) का पालन करने की मांग की है।

इसके अलावा लंबे समय से निलंबित कर्मचारियों की निष्पक्ष जांच कर उन्हें पुनः सेवा में लेने, विभिन्न विभागों में वर्षों से कार्यरत 295 ठेका कर्मचारियों को नियमित सेवा में शामिल करने तथा स्वास्थ्य विभाग के सफाई कामगारों एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को शैक्षणिक योग्यता की शर्त हटाकर 10, 20 और 30 वर्ष की सेवा संबंधी योजना का लाभ देने की मांग की गई है।

स्वास्थ्य विभाग में सहायक आयुक्त का पद लिपिक संवर्ग को देने के बजाय आरोग्य निरीक्षक पाठ्यक्रम पूरा करने वाले तथा सर्वाधिक अनुभव रखने वाले कर्मचारियों की नियुक्ति करने की मांग भी उठाई गई है। इसके साथ ही सभी विभागों में नियुक्तियों और पदोन्नति के दौरान सेवा ज्येष्ठता के नियम का पालन करने, सफाई कामगारों के सभी केबिन में पीने के पानी की व्यवस्था करने तथा स्वास्थ्य विभाग के सफाई कर्मचारियों को तीन महीने तक की छुट्टी के लिए इंदिरा गांधी मेमोरियल अस्पताल, भिवंडी से चिकित्सा प्रमाणपत्र प्राप्त करने की सुविधा देने की मांग की गई है।

इस स्मरणपत्र पर महाराष्ट्र नवनिर्माण महापालिका कामगार कर्मचारी सेना के अध्यक्ष संतोष सालवी, भिवंडी म्युनिसिपल वर्कर्स यूनियन के अध्यक्ष राजेंद्र कोंबाडी तथा रिपब्लिकन एम्प्लॉईज फेडरेशन के अध्यक्ष प्रकाश पाटील ने हस्ताक्षर किए हैं।

महासंघ ने स्पष्ट किया है कि कर्मचारियों की समस्याओं को लगातार नजरअंदाज करना अब बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। प्रशासन ने आठ दिनों के भीतर सकारात्मक पहल नहीं की तो कर्मचारियों को एकजुट कर मनपा मुख्यालय पर बड़ा आंदोलन किया जाएगा।

30वीं किल्ला दर्शन प्रतियोगिता का भव्य पुरस्कार वितरण, 100 से अधिक किलों की प्रतिकृतियों ने जीता लोगों का दिल

भिवंडी। छत्रपति शिवाजी महाराज के गौरवशाली इतिहास और उनके अदम्य शौर्य को जीवंत रखने तथा युवा पीढ़ी में देशभक्ति की भावना जागृत करने के उद्देश्य से भिवंडी में पिछले 30 वर्षों से आयोजित की जा रही किल्ला दर्शन प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण समारोह रविवार सुबह ब्राह्मण आली स्थित तिलक हॉल में संपन्न हुआ। समारोह में प्रतियोगियों, अभिभावकों और बड़ी संख्या में शिवप्रेमियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।



इस वर्ष दीपावली के अवसर पर शहर के विभिन्न इलाकों में बच्चों, विद्यार्थियों और युवाओं ने मुरुम तथा लाल मिट्टी का उपयोग कर महाराष्ट्र के ऐतिहासिक गढ़-किलों की आकर्षक प्रतिकृतियां तैयार की थीं। शहर में 100 से अधिक स्थानों पर रायगढ़, प्रतापगढ़, सिंधुदुर्ग, तोरणा, विजयदुर्ग, राजगढ़, शिवनेरी और जिंजी जैसे ऐतिहासिक किलों के सुंदर मॉडल बनाए गए। इनमें से 60 युवा मंडलों ने प्रतियोगिता में हिस्सा लेकर अपनी रचनात्मकता और ऐतिहासिक ज्ञान का परिचय दिया। शिवप्रेमी एवं इतिहास के जानकार राजूदादा घैसास के नेतृत्व में पिछले तीन दशकों से इस प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य नई पीढ़ी को छत्रपति शिवाजी महाराज के पराक्रम, स्वराज्य की स्थापना और महाराष्ट्र के गौरवशाली इतिहास से जोड़ना है।

प्रतियोगिता के विजेताओं को मिला सम्मान

प्रतियोगिता के कोबडपाड़ा विभाग में प्रथम पुरस्कार भैरव कृपा मित्र मंडल, द्वितीय पुरस्कार शिवराजे ग्रुप तथा तृतीय पुरस्कार जय गावदेवी ग्रुप को प्रदान किया गया। वहीं भिवंडी विभाग में प्रथम पुरस्कार स्वराज्य मित्र मंडल, ब्राह्मण आली को मिला। द्वितीय पुरस्कार विघ्नहर्ता मित्र मंडल, कणेरी तथा तृतीय पुरस्कार भवानी मित्र मंडल, कासार आली ने प्राप्त किया। इसके अलावा भीमेश्वर बाल मित्र मंडल को भी पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। विशेष पुरस्कार सिमोन राकेश सावे, वॉल ऑफ फ्रेम शिव संस्कृति प्रतिष्ठान, ब्राह्मण आली तथा आर.आर. रेसिडेंसी को प्रदान किए गए। अन्य प्रतिभागी मंडलों को भी उनके उत्कृष्ट प्रयासों के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार दिए गए।

गणमान्य व्यक्तियों की रही उपस्थिति

समारोह में प्रमुख अतिथि के रूप में वरिष्ठ पत्रकार पंढरीनाथ कुंभार, शरद भसाळे, किशोर पाटील, राजेंद्र कोंबाडी, राहुल घैसास, धनश्री चंपानेरकर, माधुरी घैसास, समाजसेवक ओमकार लंगडे, गणेश दुमाने और वैभव चाचड उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रतियोगिता के परीक्षक राजू घैसास ने की।

तीस वर्षों से लगातार आयोजित हो रही यह प्रतियोगिता केवल एक सांस्कृतिक आयोजन नहीं, बल्कि शिवाजी महाराज के इतिहास, स्वराज्य की विचारधारा और महाराष्ट्र की ऐतिहासिक विरासत को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण माध्यम बन चुकी है।

भिवंडी में कपड़ा कारोबारी से 13 .89 लाख रुपये की धोखाधड़ी, दो लोगों पर मामला दर्ज

भिवंडी। भिवंडी के नागांव इलाके में कपड़ा उद्योग से जुड़े एक कारोबारी के साथ लाखों रुपये की कथित धोखाधड़ी का मामला सामने आया है। आरोप है कि दो लोगों ने आपसी मिलीभगत से कच्चा माल बनाने वाले कारखाने से करीब 29.81 लाख रुपये का माल खरीदा, लेकिन इसके बदले केवल 15.91 लाख रुपये का भुगतान किया। शेष 13 लाख 89 हजार 319 रुपये की रकम मांगने पर आरोपी लगातार टालमटोल करते रहे। आखिरकार परेशान होकर कारोबारी ने शांतिनगर पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई।

पुलिस के अनुसार, शिकायतकर्ता इशराक अहमद मुख्तार अहमद मिर्झा (72), निवासी मिल्लत नगर, भिवंडी का नागांव स्थित हयात कंपाउंड में कच्चा माल बनाने का कारखाना है। आरोप है कि 27 सितंबर 2022 से 31 अक्टूबर 2022 के बीच सुमित उर्फ सुरेश लालवानी और अनिल मिचानी ने आपसी साजिश के तहत उनसे कुल 29 लाख 81 हजार 72 रुपये का माल खरीदा था।

इसके बदले आरोपियों ने कारोबारी को 15 लाख 91 हजार 753 रुपये का भुगतान किया, जबकि शेष 13 लाख 89 हजार 319 रुपये की रकम अब तक नहीं चुकाई। शिकायतकर्ता द्वारा कई बार बकाया राशि की मांग किए जाने के बावजूद आरोपी कथित तौर पर भुगतान का आश्वासन देकर मामले को टालते रहे।

लंबे समय तक रकम नहीं मिलने से परेशान कारोबारी ने अंततः पुलिस का दरवाजा खटखटाया। शिकायत के आधार पर शांतिनगर पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 420 और 34 के तहत मामला दर्ज किया है।

फिलहाल दोनों आरोपी गिरफ्तार नहीं हुए हैं। मामले की जांच पुलिस उपनिरीक्षक दीपक यादव कर रहे हैं। पुलिस मामले से जुड़े लेन-देन और अन्य पहलुओं की जांच कर रही है।

भिवंडी में जर्जर इमारत का हिस्सा दो घरों पर गिरा, महिला और तीन बच्चे घायल

भिवंडी। भिवंडी शहर के गौरीपाड़ा इलाके में जर्जर इमारत का एक हिस्सा अचानक ढहकर पास स्थित दो घरों पर गिर गया। हादसे के समय घरों में लोग सो रहे थे। इमारत का मलबा टिन की छतों को तोड़ते हुए सीधे घरों के अंदर जा गिरा, जिससे एक महिला सहित तीन बच्चे घायल हो गए। अचानक हुए इस हादसे से इलाके में अफरा-तफरी मच गई।





घायलों की पहचान आबिदा मोमिन (55), खालिद मोमिन (12), उमैरा अंसारी (6) और रैयान अंसारी (12) के रूप में हुई है। हादसे में चारों के सिर और हाथ-पैरों में चोटें आई हैं। उन्हें उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। राहत की बात यह रही कि इस घटना में किसी की जान नहीं गई।

कोहिनूर हादसे के बाद भी नहीं चेता मनपा प्रशासन!

गौरीपाड़ा की इस घटना ने भिवंडी महानगरपालिका की इमारत सुरक्षा व्यवस्था और प्रशासनिक कार्यप्रणाली पर एक बार फिर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। शहर में जर्जर इमारतों की समस्या लंबे समय से बनी हुई है। इससे पहले कोहिनूर इमारत हादसे में 10 लोगों की मौत हो चुकी है। इतनी बड़ी त्रासदी के बावजूद जर्जर इमारतों को लेकर प्रभावी कार्रवाई नहीं होने पर नागरिकों में नाराजगी है।

सवाल यह उठता है कि जब इमारत की हालत पहले से जर्जर थी, तो महानगरपालिका ने समय रहते उसकी जांच क्यों नहीं की? संभावित खतरे को देखते हुए इमारत को खाली कराने, आवश्यक मरम्मत कराने अथवा नियमानुसार ध्वस्तीकरण की कार्रवाई क्यों नहीं की गई?

आखिर महानगरपालिका प्रशासन किसी बड़े हादसे का इंतजार क्यों करता है? क्या नागरिकों की जान की सुरक्षा सुनिश्चित करना प्रशासन की प्राथमिक जिम्मेदारी नहीं है? गौरीपाड़ा की यह घटना एक बार फिर चेतावनी दे रही है कि जर्जर इमारतों के मामले में केवल नोटिस और कागजी कार्रवाई पर्याप्त नहीं है। महानगरपालिका को तत्काल सर्वेक्षण कर खतरनाक इमारतों के खिलाफ ठोस कदम उठाने चाहिए, ताकि भविष्य में किसी और परिवार को ऐसी दुर्घटना का सामना न करना पड़े।

भिवंडी में टीबी का बढ़ता खतरा, 2,839 मरीजों का चल रहा इलाज

1,603 महिलाएं और 1,236 पुरुष संक्रमित, 14 वर्ष तक के 230 बच्चे भी टीबी की चपेट में

भिवंडी। भिवंडी शहर में टीबी (क्षय रोग) के बढ़ते मामलों ने स्वास्थ्य विभाग की चिंता बढ़ा दी है। शहर में वर्तमान में टीबी के 2,839 सक्रिय मरीजों का उपचार चल रहा है। इनमें 1,603 महिलाएं और 1,236 पुरुष शामिल हैं। सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि 14 वर्ष तक की उम्र के 230 बच्चे भी इस बीमारी से संक्रमित हैं। मरीजों की समय पर पहचान कर उन्हें उपचार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से स्वास्थ्य विभाग ने जांच अभियान तेज कर दिया है। इसके तहत घर-घर जाकर संभावित मरीजों की जांच की जाएगी। टीबी विभाग की प्रभारी डॉ. बुशरा सैयद ने नागरिकों से अपील की है कि वे बीमारी के लक्षणों को छिपाएं नहीं और न ही उन्हें नजरअंदाज करें। किसी भी प्रकार के लक्षण दिखाई देने पर तत्काल नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र में जाकर चिकित्सकीय जांच कराएं। उन्होंने स्वास्थ्य कर्मियों को निर्देश दिया है कि जांच कराने में हिचकिचाने वाले लोगों की काउंसलिंग करें तथा मरीजों को नियमित रूप से दवाइयां लेने के लिए प्रेरित करें।

जिला स्तर पर 'डॉक्टर फॉर यू' के समन्वयक सैयद मोहम्मद साद ने कहा कि टीबी को लेकर सामाजिक झिझक और बदनामी के डर से कई लोग समय पर अपनी जांच नहीं कराते हैं। विशेष रूप से महिलाओं में यह समस्या अधिक देखने को मिलती है। इसके कारण बीमारी की पहचान और उपचार में देरी होती है, जिससे संक्रमण फैलने का खतरा भी बढ़ सकता है।

डॉ. बुशरा सैयद ने टीबी मरीजों को बेहतर सहायता और उपचार उपलब्ध कराने के लिए अधिक से अधिक निक्षय मित्रों से इस अभियान में शामिल होने का आह्वान किया है। उन्होंने जनप्रतिनिधियों और नगरसेवकों से भी अभियान को सफल बनाने में सक्रिय सहयोग देने की अपील की। स्वास्थ्य विभाग ने नागरिकों से आग्रह किया है कि टीबी के लक्षणों को गंभीरता से लें और जांच एवं उपचार के लिए स्वास्थ्य विभाग अथवा 'डॉक्टर फॉर यू' के स्वास्थ्य कर्मियों से संपर्क करें। स्वास्थ्य अधिकारियों का मानना है कि समय पर मरीजों की पहचान, नियमित दवा, सामाजिक सहयोग और व्यापक जनजागृति के माध्यम से भिवंडी को टीबी मुक्त बनाने के लक्ष्य की दिशा में प्रभावी प्रगति की जा सकती है।

भिवंडी में होटल, अस्पताल और मैरिज हॉल से कचरा उठाने के लिए अलग ठेकेदार नियुक्त होंगे

भिवंडी। भिवंडी शहर में कचरा प्रबंधन व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाने के लिए महानगरपालिका प्रशासन ने नई पहल की है। इसके तहत होटल, रेस्टोरेंट, भोजनालय, मैरिज हॉल, कैटरिंग व्यवसाय, अस्पताल, बाजार, मॉल, सुपरमार्केट, शैक्षणिक संस्थानों और अन्य व्यावसायिक प्रतिष्ठानों से निकलने वाले कचरे के अलग संकलन एवं परिवहन के लिए स्वतंत्र ठेकेदार नियुक्त करने का प्रस्ताव तैयार किया गया है। प्रशासन ने यह प्रस्ताव आगामी महासभा की मंजूरी के लिए प्रस्तुत किया है।



प्रस्ताव के अनुसार, महानगरपालिका के सभी 23 वार्डों में अलग-अलग एजेंसियों की नियुक्ति की जाएगी। ये एजेंसियां व्यावसायिक प्रतिष्ठानों से निकलने वाले गीले और सूखे कचरे को अलग-अलग एकत्रित कर उसका परिवहन करेंगी। इसके बदले प्रतिष्ठानों से प्रतिमाह 600 रुपये से लेकर 2,400 रुपये तक शुल्क वसूलने का प्रस्ताव है। हालांकि, इस व्यवस्था के तहत एजेंसियों से कचरा संकलन की सेवा लेना व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के लिए वैकल्पिक रखा गया है।

शहर में रोजाना 500 मीट्रिक टन तक कचरा

महानगरपालिका प्रशासन के अनुसार, भिवंडी शहर में प्रतिदिन लगभग 450 से 500 मीट्रिक टन ठोस कचरा उत्पन्न होता है। बढ़ती आबादी और निर्माण गतिविधियों के कारण कचरे की मात्रा लगातार बढ़ रही है। दूसरी ओर, उपलब्ध कर्मचारियों और मशीनरी की कमी के चलते कचरा प्रबंधन में कई चुनौतियां सामने आ रही हैं। सार्वजनिक स्थानों पर कचरे के ढेर लगने और नालों में कचरा फेंके जाने से गंदगी तथा जनस्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी बढ़ रही हैं। विशेष रूप से होटल, भोजनालय और मैरिज हॉल से निकलने वाला कचरा कई बार देर रात सड़कों के किनारे फेंक दिया जाता है।